CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत रामायण

डा. अरुण कुमार सेन

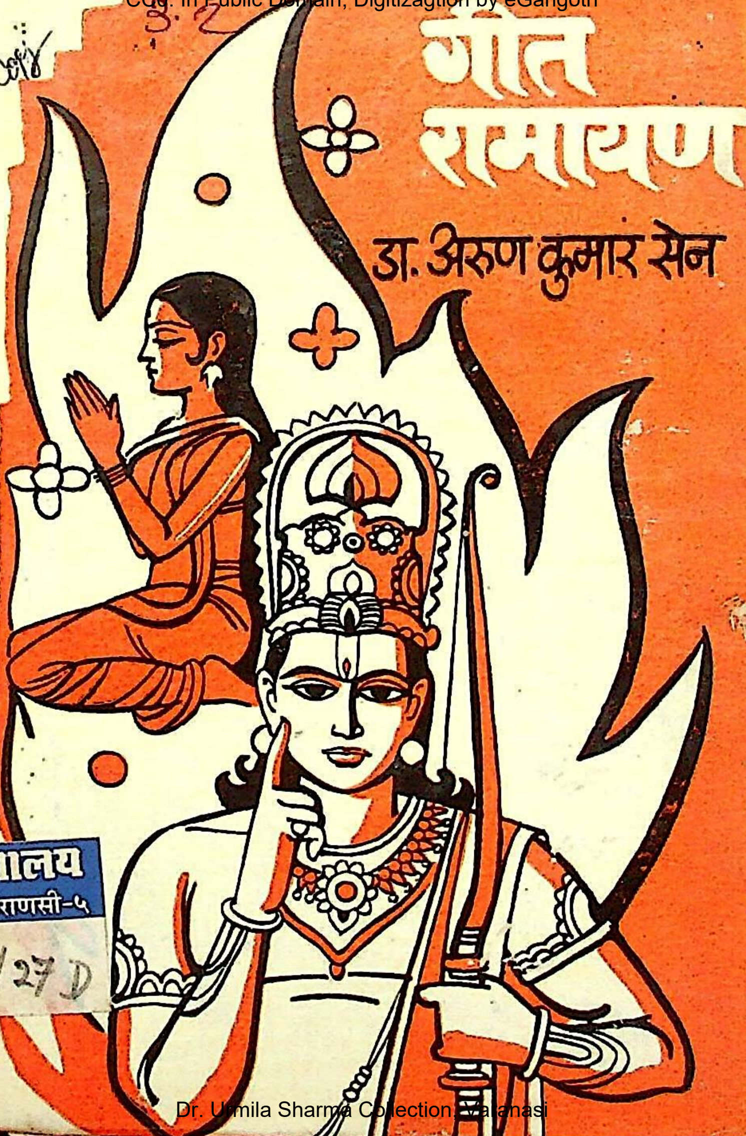

न्थालय
, वाराणसी-५
31/27 D

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

डा॰ अरुणकुमार सेन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

31/27D
आम्नाय-ग्रन्थालय
चरतिमिति, करौंदी
वाराणसी-5

श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये

गीत रामायण

आम्नाय-ग्रन्थालय,
चरतिमिति, करौंदी
वाराणसी-5

(मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र के पावन चरित्र पर आधारित स्वरचित कुछ गीतों का संकलन)

डा. अरुण कुमार सेन
एम. ए. पीएच. डी. साहित्य रत्न,
संगीत रत्न, धर्मविशारद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

© सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण
दिसम्बर १९७०

मूल्य ३ रु. ५० पैसे

"गीत रामायण" के मंचगान या किसी भी प्रकार के मंचप्रदर्शन हेतु लेखक की लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

आदरणीया जननी
श्रीमती
स्वर्णलता देवी
को समर्पित

माँ !

तुम कहा करती हो कि पिताजी गाते हुए सुदूर ग्रामपथ से जब लौटते थे तब उनके कण्ठस्वर से सम्पूर्ण ग्राम स्वरित हो जाता था। उनकी गोद में बैठकर ही मैंने गाना सीखा था।

पिता जी से प्राप्त उन्हीं स्वरों को तुमसे प्राप्त संस्कारों के साथ समन्वित कर "गीत रामायण" की रचना कर सका हूँ जिसे सादर तुम्हें समर्पित करता हूँ।

अरुण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

— प्राक्कथन —

राम–कथा भारतीय संस्कृति का गौरव है। अनेक कवियों ने अनेक भाषाओं में राम–कथा को महाकाव्य का स्वरूप देकर अजर अमर किया है। "गीत रामायण" श्रीराम जानकी के चरणों पर मेरी श्रद्धांजलि है। उनकी महान जीवन गाथा से ग्रहणीय तथ्यों का उद्घाटन कर "मर्यादा पुरुषोत्तम" स्वरूप का प्रकाशन इसका उद्देश्य है।

गीतों को यथा सम्भव सरल रखने का प्रयास मैंने किया है ताकि श्रोताओं के लिए चिन्तन के फल स्वरूप रसानुभूति में अवरोध न हो।

श्री सुधीर फडके का ऋणी हूं। उनके मराठी "गीत रामायण" गान ने ही हिन्दी में "गीत रामायण" रचकर गाने की मुझे प्रेरणा दी। श्री ग. दि. माडगुलकर, जो मराठी "गीत रामायण" के रचयिता हैं, उनसे भी बम्बई में मिलने का सुयोग आया था, उन्होंने मुझसे कहा था, "आपने वाल्मीकि के अतिरिक्त अन्य कवियों की राम–कथा से भी मार्मिक प्रसंगों को गीत रूप देकर बहुत अच्छा कार्य किया। मेरा मराठी प्रयास वाल्मीकि कृत रामायण पर ही आधारित है।" बम्बई में श्री सुधीर फडके के निवास स्थल पर उन्होंने मेरे कुछ गीतों को सुनकर अश्रुपूरित नेत्रों से मुझे उत्साहित किया जो मेरे जीवन का एक स्वर्णिम अवसर बना। श्री सुधीर फडके और मैंने सुर सिंगार सम्मेलन के तत्वावधान में क्रमशः मराठी व हिन्दी में अपना अपना "गीत रामायण" ४ नवम्बर १९६९ को रंग भवन, बम्बई के मंच पर गाया था। उस दिन श्री सुधीर फडके ने अपना गायन समाप्त करते हुए मेरे "गीत रामायण"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का वम्बई के रसिक श्रोताओं के सम्मुख अत्यन्त मार्मिक शब्दों में परिचय दिया जिसके लिए मैं उनका आभारी हूं ।

श्रोताओं के आग्रह पर "गीत रामायण" पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है । श्री रामेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव (राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त) संस्थापक–प्राचार्य, पब्लिक उच्चतर माध्यमिक शाला, रायपुर और श्री टी. सी. आर. मेनन, (भोपाल) जो मेरे पथ प्रदर्शक रहे हैं, उन्होंने क्रमशः हिन्दी और अंग्रेजी में भूमिका लिखी, जिसके लिए उपकृत हूँ । डा० वलदेव प्रसाद मिश्र, स्वामी आत्मानन्द, स्व. श्री उमावर मिश्र, श्री धाराचन्द ठाकुर, श्री वामन विनायक ओक एवं अन्य महानुभावों तथा पत्रकारों ने अपने विचारों से मेरा पथ आलोकित किया है । "गीत रामायण" का स्वच्छ मुद्रण कार्य श्री अनंत महादेव नाईक ने अत्यन्त परिश्रम पूर्वक किया है ।

गीत-सुमनों को कथा-सूत्र में पिरोकर श्रीराम–जानकी के चरणों पर मेरा यह "स्वान्तः सुखाय" माल्यार्पण रसिक पाठक एवं श्रोता कृपा पूर्वक अपनावेंगे तो अपने को कृतार्थ समझूंगा । साथ ही उनसे मेरी याचना भी है । समय समय पर अपने ज्ञान–सौरभ कोश से वे कृपा पूर्वक मुझे अन्य प्रसंगों के सुरभि–कण भी भेंट करते रहें जिन्हें गीत–सुमनों का ललित रूप दे अपनी "गीत रामायण" माला को मैं आजीवन सजाता सँवारता रहूँ ।

विनीत–

प्राचार्य
कमलादेवी संगीत महाविद्यालय
रायपुर (म. प्र.)

रायपुर
४ सितम्बर ७०
गणेश चतुर्थी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रमणिका

क्र.	प्रसंग	राग	पृष्ठ
	वन्दना–	यमन कल्याण–	१
१	अवतार व बाल्यकाल–	गौड सारंग–	३
२	अहल्या उद्धार–	भीमपलासी–	५
३	सीता स्वयंवर–	भूपाली– (मधुवन्ती यमन–कल्याण, वसन्त और बहार रागमाला सहित)	७
४	उर्मिला विरह–	शिव रंजनी–	१३
५	राम वनगमन–	जोगिया–	१५
६	केवट प्रसंग–	आभोगी–	१७
७	भरत की करुणा–	मिश्र तिलंग–	२०
८	श्रीराम की दृढ़ता–	भजन धुन–	२३
९	शूर्पणखा प्रसंग–	बहार–बसंत–	२६
१०	सीता हरण–	कलावती–	२९
११	श्रीराम विलाप–	मारू विहाग–	३२
१२	शबरी प्रीति–	अहीर भैरव–	३४
१३	बाली वध की सार्थकता–	यमनकल्याण–	३६
१४	जानकी विलाप–	पूरिया धनाश्री–	३८
१५	लंका दहन–	मालकौस–	४१
१६	सेतु बन्धन–	नायकी कानड़ा–	४४
१७	रावण अंगद संवाद–	सोहनी–	४६
१८	राम रावण युद्ध–	मिश्र हंसध्वनि–	४८
१९	आभूषणों का मूल्यांकन–	हास्य धुन–	५१
२०	भरत राम मिलन–	कीर्तन–	५३
२१	राजा राम की अग्नि परीक्षा–	काव्य पाठ–	५५
२२	कर्तव्य परायण सीता–	गुजरी तोडी–	५८
२३	लव कुश कृत रामायण गान–	यमनकल्याण–	६०
२४	सीता का आत्मोत्सर्ग–	भैरवी–	६३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री गोविन्द अग्रवाल
श्री वालकृष्ण
श्री रामनाथ वर्मा

डा० अरुणकुमार सेन

श्रीमती अनिता सेन

ठा. महेन्द्र प्रतापसिंह
श्री प्रेमनाथ शुक्ला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

—: भूमिका :—

डा. अरुण कुमार सेन द्वारा रचित "गीत रामायण" अपने मानवीय कर्त्तव्यों और संस्कृति से उदासीन आधुनिक भारतीय समाज के लिये वहुमूल्य भेंट है। इस रचना का मूलाधार यद्यपि वाल्मीकि रामायण एवं तुलसीकृत रामचरित मानस हैं, फिर भी डा. सेन ने श्रीराम के अवतार वाद को गौण रखते हुए उनके मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप की हृदयग्राही झांकी प्रस्तुत करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की हैं। यों तो राम–गाथा विश्व के अनेक देशों में विविध रूपों में पूर्व ऐतिहासिक काल से प्रचलित है। उनमें वर्णित कथा प्रसंगों में पाठान्तर एवं विभिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हों परन्तु चरित नायक के मानवीय चरित्र विकास में उदात्त गुणों का आभास सर्वत्र मिलेगा।

राम हमें प्रिय क्यों हैं? क्योंकि उनके चारित्रिक उत्कर्ष में मानवीय गुणों की मर्यादा प्रतिष्ठित है। उनके कार्य ही उनके उन आदर्श गुणों को प्रतिष्ठित करते हैं जिनका प्रतिपालन किसी भी समाज के लिये उत्कर्ष दायक है। डा. सेन ने इसी दृष्टिकोण को अपनाया है।

रामगाथाएँ विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक स्वरूपों तथा गेय पदों में निरूपित हैं जो राम चरित्र का आंशिक दिग्दर्शन मात्र ही कराती हैं। महाकाव्यों के पढ़ने के लिये समय, क्षमता और रुचि आधुनिक जीवन की जटिलताओं में ग्रस्त समाजं में नगण्य ही है। ऐसी परिस्थिति में डा. सेन द्वारा रचित "गीत रामायण" दो घंटों की अवधि में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र को न केवल प्रस्तुत करती है वरन् हृदय पटल पर चरित नायक के सुकृत्यों को प्रतिविम्बित करती है। उनकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साहित्यिक क्षमता और संगीतज्ञता भारतीय संस्कृति के उत्थान में अतुलनीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

साहित्य एवं संगीत के क्षेत्र में समान दक्षता रखने वाली उनकी पत्नी श्रीमती अनिता सेन ने "गीत रामायण" के अधिकाँश गीतों को गौड सारंग, आभोगी, कलावती, शिवरंजनी, नायकी कानड़ा, यमन कल्याण सदृश शास्त्रीय रागों व आवश्यकतानुसार प्रादेशिक लोक धुनों द्वारा स्वरित करने में पूर्ण सहयोग दिया है, जो रस निष्पत्ति की दृष्टि से अत्यन्त सराहनीय हुआ है। उदाहरणार्थ "राम जन्म" का गीत गौड़सारंग में है जो जन्म के अनुकूल दोपहर का ही राग है। उर्मिला की व्यथा के लिये शिव रंजनी, केवट प्रसंग के लिये आभोगी और शूर्पणखा के आत्म निवेदन हेतु वसंत वहार अत्यंत मर्मस्पर्शी प्रयोग हैं। संगीत शास्त्र में वर्णित राग रागिनियों के मनोहर स्वरूपों को नई शब्दावली के साथ प्रस्तुत करना आधुनिक युग की वहुत वड़ी आवश्यकता है। नायिका भेद, नखशिख वर्णन, संयोग व वियोग श्रृंगार का प्रस्तुतीकरण मात्र भारतीय संगीत का लक्ष्य नही होना चाहिये।

डा. सेन द्वारा रचित "गीत गाँधी", गीत नानक, गीत महावीर आदि बहुत थोडे समय में ही बहु–प्रशंसित सिद्ध हुए हैं और अनेक के रेकार्ड भी बन चुके हैं। मैं डा. सेन के इन प्रयासों की प्रशंसा ही नही करता वरन् यह भी आशा करता हूँ कि इसी तरह अपनी लेखनी द्वारा महापुरुषों के कल्याणकारी चरित्रों को वे प्रतिविम्बित करते रहें।

—रामेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव

१४–९–७०
अनन्त चतुर्दशी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

FOREWORD

Ramayan and Mahabharat are the two great epics which our Country has considered as our priceless heritage. "Geet Ramayan" is a pioneer attempt of Dr. Arun Kumar Sen to tell the story and spread the message of Ramayan to the people in songs. There are 24 of these songs set to tune in ragas which appropriately reflect the various emotions which the situations they describe are expected to portray. The language used is extremely simple Hindi and it is to the credit of Dr. Sen and Shrimati Anita Sen that the whole composition is able to create and sustain the varying atmospheres throughout. Emotions such as anger, happiness, pride, fear and compassion are built up through the agency of these songs sung in varying moods.

This is by no means an easy task — the selection of the passages to ensure continuity, the compositions and the choice of particularly suitable ragas to depict the moods or emotions of the story. Hundreds and thousands of people read the Ramayan daily– some as a religious ritual, others as a sort of spiritual battery to them to meet the challenges of life. The beauty of Dr. Sen's

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Geet Ramayan is that it will appeal not only to all such people, but also to people who only just know the story of Rama and Sita — to the common man and the intellectual alike.

The unique reception which has been received by the Geet Ramayan shows how much it has appealed to and caught the imagination of all sections of people. Individuals who have heard it have spoken very highly of it and newspapers have had nothing but praise for it even in places like Bombay where everyday some cultural activitiy goes on and people take such activities very complacently. I had occasion to hear it when Dr. and Shrimati Sen gave a performance at the Raj Bhavan before a select audience, every member of which was profoundly moved.

In his Geet Ramayan Dr. Sen has treated Ram as a "Maryada Purusha" — a man of perfection, who wants to do what he considers right and proper and is prepared to bear all consequences thereof. The story ends on a tragic note with the Patal Pravesh of Sita. And perhaps rightly too; because Ram's life was one of suffering and hardship and a constant battle against the challenges of life. He is an "Avatar Purusha" and the way in which life deals with him and how he responds to it, inspires every person to meet with courage his own problems of life.

'Ram Janma' and 'Sita Swayamvar' in the beginning strike a happy note. From Rama's 'Van Gaman' the pathos starts Particularly touching is the song in which Bharat, on coming to hear of Ram's decision to go for fourteen years for Van-Vas and leave the Kingdom to be ruled

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

by him, asks Ram whether he could not have atleast sent a word to him before making such a momentous decision affecting everyone. Ram's words of consolation and advice to his brother, the pathos of separation when Sita is carried away by Ravan, the activity of Hanuman in 'Lanka Dahan' and of the monkeys in building the Setu Bandh; the atmosphere of these scenes is different from that of the fight between Ram and Ravan, the humour behind the monkeys playing with the ornaments and the re-union of Bharat and Ram. In everyone of these songs the rag has been selected so skil-fully that the proper spirit and atmosphere are built up and sustained throughout As far as I know, there has been an attempt to bring out Ramayan in Geet in Marathi only but not in Hindi. And for the remarkable manner in which this pioneering attempt has been made and the appeal that it has evoked in such a short time, Dr. Sen deserves our warmest compliments.

In choosing the themes for the songs and in attempting to draw a picture in the minds of the audience of Ram as 'Maryada Purusha', Dr. Sen has depended on both the versions of the Ramayan-that of Valmiki and of Tulsidas. How far he has succeeded in conveying that image, those who have heard the Geet Ramayan can testify. It has stirred people wherever it has been sung and the effect is heightened by the deep, rich and sonorous voice of Dr. Sen (who, incidentally is a classical singer and has a doctorate in music to his credit) and the sweet and melodious voice of Shrimati Sen.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Having heard the Geet Ramayan and felt its impact, I sincerely feel that Dr. Sen has, in this pioneering attempt of his, opened up a new line to popularise the epic masterpieces which are the heritage of our country. He has already made a great success of it; and as Geet Ramayan is sung in more and more places and heard by more and more people, its appeal will spread till it will find a place in every household. When this happens—as it is bound to – Dr. Sen will have the unique satisfaction of having blazed a new trail with success in his very first attempt.

10th Oct., 70 T. C. R. Menon

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

No. 1456 धनुषधारी राम S.S.B.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

— वन्दना —

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णू, गुरुर्देवो महेश्वराः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकि कोकिलम् ॥

तुलसीदास रूपाय रामचन्द्राय वेधसे ।
रामचन्द्र स्वरूपाय तुलसीदासाय वै नमः ॥

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरंतं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री रामावतार के अनेक कारण हुए। श्रीहरि के प्रिय द्वारपाल जय और विजय सनकादि ऋषि के अभिशाप से हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष बने, जिन्हें उन्होंने नरसिंह और वाराह अवतार लेकर मारा। वे ही रावण और कुम्भकर्ण का प्रचण्ड रूप लेकर जन्मे थे, जिन्हें मारकर जनहित करना आवश्यक था। मोहग्रस्त भक्त नारद का अभिमान दूर करने गये तो भगवान स्वयं शापग्रस्त हो गये। नारद ने कहा, "मुझे आपने वानर रूप देकर छला, वही वानर जब आपके सहायक बनेंगे, तभी आप राक्षसों का वध करने में समर्थ होंगे। मुझे आपने नारी का विरह दिया जो आपको भी भोगना पड़ेगा। श्रवण कुमार की मृत्यु से सन्तप्त अन्धे पिता का अभिशाप दशरथ को भोगना था। राक्षसों के अत्याचार से त्रस्त पृथ्वी, देवता आदि प्रभु से अवतार लेने का आग्रह कर रहे थे। इन्हीं कारणों के फलस्वरूप संसार को पथ दिखाने के लिये, पृथ्वी के भार को दूर करने के लिये, चैत्र शुक्ल नवमी को, दोपहर के समय, पुत्रेष्टि यज्ञ से प्राप्त खीर भक्षण के फलस्वरूप कौशल्या के गर्भ से श्रीराम, सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण, शत्रुघ्न और कैकयी के गर्भ से भरत का जन्म हुआ। अयोध्यावासी आनन्द उल्लास में डूब गये:—

ईश ने अवतार मानव का लिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवतार व बाल्यकाल

पथ दिखाने के लिये संसार को,
दूर करने के लिये भवभार को,
चैत्र शुक्ला, दिवस नवमी, दोपहर,
ईश ने अवतार मानव का लिया,
कौशिला को मातृपद प्रभु ने दिया ॥

अयोध्या में छा गया आनन्द था,
युवा, बालक, वृद्ध सबमें छन्द था,
हर्ष का, उल्लास का, मकरन्द था,
वीर बालक चार दशरथ के हुए,
अग्नि ने दे खीर, था उपकृत किया ॥

राम, लक्ष्मण, शत्रुघ्न भरतादि से,
कौशिला कैकई सुमित्रा खेलतीं,
हाथ उनका पकड़ छम छम भूमि पर,
चलातीं, हंसकर रुठातीं, चूमतीं,
परम प्रभु ने मनुज बनकर सुख दिया ॥

समय बीता देखते ही देखते,
चार भाई साथ पढ़ते, खेलते,
गुरु–कृपा से सभी विद्या सीखते,
शर चलाना, वेद पढ़ना और सारे
कला–कौशल, युद्ध करने की क्रिया, ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चारों भाई क्रमशः बड़े हुए, गुरुगृह गये और अल्पकाल में ही सब विद्याओं में पारंगत हो गये। बाल लीलाओं से श्री राम जब सब को चमत्कृत कर रहे थे, उसी काल में विश्वामित्र मुनि राजा दशरथसे मिलने अयोध्या पधारे। राजा ने उनका सत्कार कर आने का कारण पूछा। विश्वामित्र ने कहा, "महाराज, आपके राम और लक्ष्मण को कुछ दिनों के लिये मुझे दीजिये ताकि उत्पाती राक्षसों को मारकर श्रीराम मुनि–समाज को निश्चिन्त कर सकें।" राजा दशरथ ने, अनिच्छा होते हुए भी मुनिवर की भावनाओंका आदर किया और भारी हृदय से राम और लक्ष्मण को उन्होंने विश्वामित्र के साथ भेज दिया। श्रीराम ने एक ही बाण से ताड़का का वध किया, क्रोध से मारीच व सुबाहु आदि राक्षस हवन–कुण्ड नष्ट करने दौडे पर दोनों भाइयों ने उनका शमन कर सब को निर्भय कर दिया। उसी समय राजा जनक ने सीता स्वयंवर की घोषणा की। देश देश से राजे महाराजे जनक पुरी जा रहे थे। ऋषिगण भी कौतुकवश जा रहे थे। विश्वामित्र की इच्छा से श्रीराम और लक्ष्मण भी चले। मार्ग पर श्रीराम के चरणस्पर्श से गौतम पत्नी दुखी अहल्या का उद्धार हुआ जो बेचारी पति के श्राप से शिला बन गई थी। प्रभु के चरणों को आंसू से धो रही थी अहल्या—

गौतम घरनी दुखी अहल्या, झरझर बहे अश्रु की धारा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहल्या उद्धार

गौतम-घरनी दुखी अहल्या,
झरझर बहे अश्रु की धारा ॥

"इन्द्र सदा आसक्त विकारी,
छली गई मैं, दुर्बल नारी,
शाप दिया स्वामी ने भारी,
बनी शिला, कैसी लाचारी,
धन्य राम प्रभु, धन्य अवधमणि,
चरण-स्पर्श देकर उद्धारा ॥"

"जिन चरणों से निकली पावन,
गंगाधारा जो जग-तारन,
मुक्ति मिली चरणों के कारण,
धन्य हुई कर मस्तक धारण,
मेरें दुख का अन्त हुआ प्रभु,
मिटा पाप अपयश अब सारा ॥"

"पति का शाप बना वर मेरा,
मिले आप प्रभु मिटा अंधेरा,
दूर हुआ जगती का फेरा,
जग-जीवन तो रैन बसेरा,
हे रघुनायक, हे अघ-हारक,
इस अबला को मिला किनारा ॥"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोनों भाई जनकपुर पहुंचे। राजा जनक की घोषणा थी कि जो शिव के धनुष को तोड़ सकेगा, सीता उसके गले में ही वरमाला डालेगी। सैकड़ों राजे, महाराजे अपने भाग्य की, शक्ति की परीक्षा देने पहुंचे थे। सभा में बड़ी उत्तेजना थी। रावण, बाणासुर आदि सभी पराक्रमी राजागण स्वयंवर मण्डप में उपस्थित थे।

जनक-सुता का आज स्वयंवर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीता स्वयंवर

जनक–सुता का आज स्वयंवर,
बरस रहे थे फूल गगन से,
दुलहिन सीता और राम वर ।।

ले उमंग राजागण आये,
रावण, बाणासुर सब धाये,
शिव के धनु को कौन उठाये!
तोड़ कौन सीता को पाये?
लगी हुई थी होड़ सभी में,
उछल रहे थे वीर धनुर्धर ।।

बड़े वीर योद्धा थे सारे,
एक एक कर सब वे हारे,
धनुष–भंग तो दूर बिचारे,
हिला सके ना, श्रम कर हारे,
बहते श्रमकण तन से झरझर ।।

सीता का मन भरा पीर से,
दुखी जनक के शब्द तीर से,
"हुई धरा क्या शून्य वीर से?"
"नहीं नहीं-"जय घोष भीड़ से,
ओज पूर्ण थे लक्ष्मण के स्वर ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

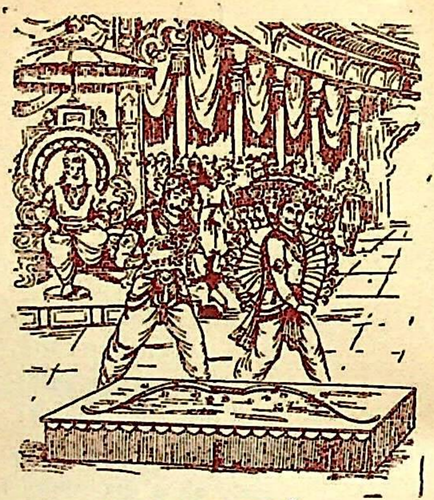

रावण, बाणासुर सब धाये

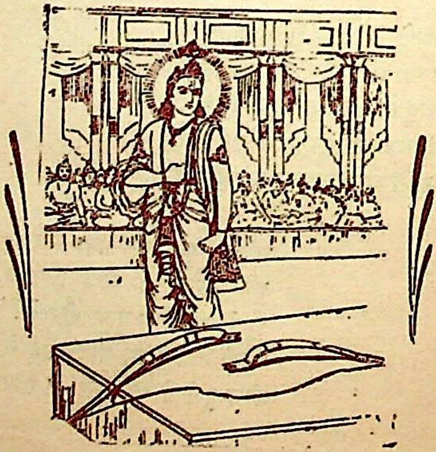

रामचन्द्र के स्पर्श मात्र से टूट धनुष था पड़ा भूमि पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु की आज्ञा हुई उसी क्षण,
"राम करो तुम पूर्ण जनक-प्रण",
लीला देख रहे नृप-मुनि-गण,
रामचन्द्र के स्पर्श मात्र से,
टूट धनुष था पड़ा भूमि पर ।।

क्रोधि परशुराम तब आये,
दंभ-द्वेष में थे भरमाये,
रामचन्द्र अमृत बरसाये,
समझ गये जब, प्रभु-लीला ये,
शीतल हुए तपस्वी मुनिवर ।।

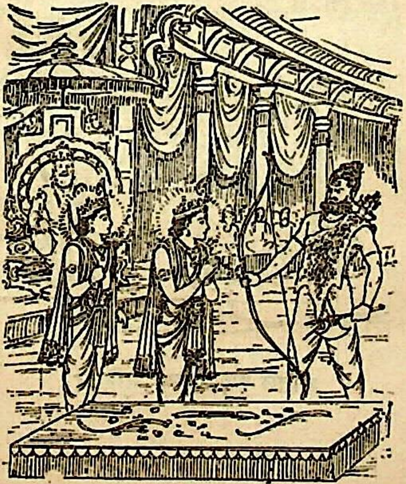

क्रोधी परशुराम तब धाये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शीतल हुए तपस्वी मुनिवर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनक-राज ने हर्ष मनाया,
"जय जय राम", घोष नभ छाया,
दशरथ को सादर बुलवाया,
धमधाम बारात सजाया,
लोग चले सानन्द जनक-घर ।।

माताओं ने मंगल गाया,
ऋषियों ने सविधान बिठाया,
पाणिग्रहण संपन्न कराया,
मिली ब्रह्म से जैसे माया,
"धन्य धन्य", कहते नारी-नर ।।

सीता-राघव, उर्मिल-लक्ष्मण,
मांड्वी-भरत, श्रुतकीर्ति-शत्रुघन,
चार जोड़ियां, सुन्दर पावन,
दशरथ और जनक का मधुवन,
एक हुआ था मानो मिलकर,

जनक-सुता का आज स्वयंवर ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशरथ और जनक के मधुवन मिलकर एक हो गये। सीता–राम, उर्मिला–लक्ष्मण, माण्डवी–भरत, और श्रुतकीर्ति– शत्रुघ्न को लेकर आनन्दोत्सव मनाते हुए राजा दशरथ अयोध्या लौटे। कुछ दिनों के बाद राजा दशरथ ने श्रीराम के राज्याभिषेक की घोषणा की। गीत एवं वाद्यध्वनि से राज्य मुखरित हो उठा, पर होनहार को कौन टाल सकता था? मन्थरा दुष्टा स्त्री थी, कैंकेयी के साथ उसके मायके से आई थी। उसकी दुष्टता का परिणाम भीषण हुआ और साथ ही साथ श्रीराम का आदर्श पुत्रस्वरूप सामने आया। पितृ–वचन पालन करने श्रीराम उसी क्षण प्रस्तुत हो गये। सीता का आग्रह न टाल सके। वह भी. साथ चलीं, अनन्य भक्त लक्ष्मण भी साथ चलने तत्पर हुए। पतिव्रता उर्मिला से जब लक्ष्मण विदा लेने गये. तब उर्मिला ने मुस्कराकर लक्ष्मण से कहा :–

रहो स्वामी साथ प्रभु के
उर्मिला नीरव सहेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उर्मिला नीरव सहेगी

रहो स्वामी साथ प्रभु के,
उर्मिला नीरव सहेगी ।।

नहीं दुर्बल सदा नारी,
विरह ज्वाला रहे भारी!
हृदय में जो छवि तुम्हारी,
वही मुझको शक्ति देगी ।।

जा रहे प्रभु तुम विपिन में,
जियूंगी दिन वर्ष गिन में,
"वर्ष चौदह कटे छिन में,"
तुम्हारी दासी कहेगी ।।

पातिव्रत मेरा निराला,
हंस रही पी विरह प्याला,
मृत्यु तक दासी तुम्हारी,
चरण–रज मस्तक धरेगी ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराम से बिछुड़ने की दु:सह व्यथा से अयोध्यावासी हाहाकार करने लगे। कौशल्या, सुमित्रा, पुरजन, परिजन सबका हृदय फटा जा रहा था। दशरथ मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए थे और दूसरी ओर श्रीराम, सीता और लक्ष्मण वनवासी बनने चले थे।

वने राम लक्ष्मण वनवासी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राम वनगमन

वने राम लक्ष्मण वनवासी,
हाय अयोध्या के कण कण में,
छाई घोर उदासी ।।

दशरथ, सिर धुनते, अकुलाते,
सभी मौन हो अश्रु वहाते,
नर, नारी गण शोक मनाते,
राम–लखन सचमुच वन जाते.
कहतीं सीता, "साथ चलूंगी
चरणों की मैं दासी "।।

"रुको राम!" कहते सब प्राणी,
बड़ी करुण वनवास कहानी,
अश्रु पोंछते योगी ज्ञानी,
रुँधी हुई जन जन की वाणी,
पितृ–वचन का मान बढाते
होकर राम प्रवासी ।।

यदि न राम जंगल को जाते,
ऋषि मुनियों को गले लगाते,
पुरुष–श्रेष्ठ कैसे कहलाते,
"राम राज्य" कैसे हम पाते
चरणधूलि लेकर सब रोते
आँखें सबकी प्यासी ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वनपथ पर श्रीराम श्रृंगवेरपुर पहुंचे। निशादराज ने उनकी बड़ी सेवा की। तदुपरांत तीनों गंगा के किनारे पहुंचे। श्रीराम ने केवट से कहा, "केवट भाई, हमें उसपार ले चलो।" परम भक्त केवट को प्रभु के चरण पखारने का बहाना मिलगया। कहने लगा, "आपके चरण बड़े मायावी हैं भगवन्! इन चरणों के स्पर्श से शिला नारी बन गई, मेरी नाव लकडी की है और भींगकर नरम हो गई है। चरणों को जब तक धो नही लूंगा, आपको नाव पर नहीं बिठालूंगा।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केवट प्रसंग

"इन चरणों से प्रभु डरता हूं,
इस नैया से सब परिजन का
पालन पोषण करता हूं"।।

"मायावी हैं चरण तुम्हारे,
पत्थर को नारी कर तारे,
कहीं बने यह नैया नारी,
इसी सोच में मरता हूं."।।

"चरण–धूलि अपने सर धारूं,
चरण–कमल में आज पखारूं,
नदी पार तुम जाओ पीछे,
भवसागर में तरता हूं"।।

सिय को देख राम मुसकाये,
दीन भक्त केवट तब धाये,
बोले, "प्रभु बस पांव धुलालो,
नदी पार ले चलता हूं"।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

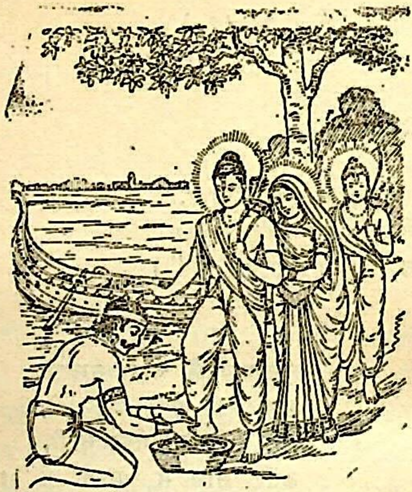

इन चरणों से प्रभु डरता हूँ ।

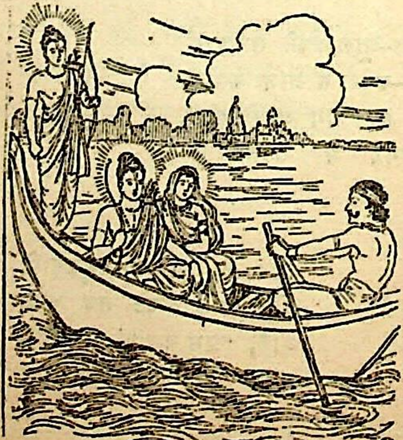

प्रभु [illegible], [illegible] पार ले चलता हूँ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गंगा पार कर श्रीराम प्रयागराज पहुंचे, भरद्वाज ऋषि के आश्रम गये और बढ़ते हुए वाल्मीकि के आश्रम पर पहुंचे। वाल्मीकि के ही निर्देशानुसार श्रीराम चित्रकूट में कुटी बनाकर निवास करने लगे। भैया व भाभी की सेवा में लक्ष्मण एकनिष्ठ होकर जुट गये। इधर श्रीराम को गंगा तट तक पहुंचाकर दुखी सुमन्त्र अयोध्या लौट आये। राम के न लौटने का समाचार सुन शोक विव्हल दशरथ ने "हा राम, हा राम" कहते हुए प्राण त्याग दिया। शोक पर शोक, बेचारा भरत उस समय मामा के घर पर था। उस अभागे को बुलवाया गया। स्थिति को समझकर भरत का हृदय विदीर्ण होने लगा। पिता की अन्त्येष्टि क्रिया के बाद, सम्पूर्ण अयोध्यावासियों के साथ भरत और शत्रुघ्न चित्रकूट पहुंचे। लक्ष्मण शंकित हुए पर श्रीराम ने भरत के निर्मल प्रेम पर विश्वास प्रकट करते हुए लक्ष्मण को समझाया। भरत श्रीराम के चरणों से लिपट कर रोये। उनकी मूक व्यथा फूट पड़ी :–

वनवासी बनने के पहले भैया मुझको बुलवा लेते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भरत की करुणा

विकल भरत कहते करुणा से,
"एक बार तो अवसर देते,
वनवासी बनने के पहले,
मुझको भैया बुलवा लेते"॥

"सिर पर जटा, कमर पर वल्कल!
धनुष वाण का केवल सम्बल!
हाय जननि ने किये प्रबल छल!
भैया, कैसा रूप यह सरल!
पद-सेवा से मैं ही वंचित!
लक्ष्मण, भाभी साथ चले थे"॥

"माँ ने दो वर मांगे निश्चय,
किंतु पिता का मौन पराजय
सिसक रहा था, माँ ने निर्दय,
कहा तुम्हें जाने को निर्भय!
हाय पिता की करुण विवशता,
भैया राम! समझ तो लेते"॥

"पिता गये परलोक तड़पते,
"राम राम, हा राम!" कलपते,
पुरजन, परिजन सभी बिलखते,
भैया! भाभी!! मुझे परखते,
मामा का घर दूर नहीं था,
बुला मुझे तो राज्य सौंपते"॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"जिस माँ ने वरदान लिया था,
तुमको मुझसे अलग किया था,
पुत्र-मोह-मद पान किया था,
हाय पिता का प्राण लिया था!
वही तुम्हारी कैकई माता,
देखो आई तुम्हें खोजते"।।

"देखो भैया! सब आये हैं,
गुरु वशिष्ठ सबको लाये हैं,
रोती देखो माताएँ हैं,
मृत शरीर जीवन पाये हैं,
चित्रकूट में मुझे छोड़ दो!
रहे भरत वनवास भोगते"।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

श्रीराम यह जानते थे कि वनगमन के पहले यदि भरत अयोध्या लौट आते तो पितृ-वचन पालन का आदर्श वे प्रस्थापित नहीं कर पाते। राक्षसों के अत्याचारों का शमन कर ऋषि मुनियों को निश्चिन्त करना भी उनका एक उद्देश्य था। इसीलिये श्रीराम ने अत्यन्त मधुर, किन्तु गम्भीर, एवं दृढ़ शब्दों में भरत को समझाया:-

भैया ! पितृ वचन को पालो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराम की दृढ़ता

भैया! पितृ-वचन को पालो,
वन में मैं निश्चिन्त रहूंगा,
तुम जा राज्य संभालो ।।

अधम पुत्र हम, हाय हमारे
पूज्य पिता परलोक सिधारे,
दाह-कर्म में दूर रहा रे,
अर्घ्य, पिण्ड जल दे न सका रे,
भरत! विधाता के निर्णय को,
हर्ष सहित अपनालो ।।

उचित सदा है माँ का निर्णय,
मेरा राज्य अशुभ था निश्चय!
राज्य तुम्हारा होगा सुखमय,
इसमें है अब कोई न संशय,
इसीलिये हूं दूर अवध से,
माया तुम तज डालो, ।।

राज-सिंहासन तुम्हें प्रिय नहीं,
ज्ञात मुझे, यह पूर्ण सत्य ही,
किंतु पिता का वचन जब यही,
चाहे हो अधसुनी! अधकही!
पूर्ण उसे करना है हमको,
रघुकुल रीति निभालो ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौदह वर्षों की लघु वेला,
बीतेगी मैं नहीं अकेला,
अवध वासियों का यह मेला!
संग लिये तुमने दुख झेला,
अवध तुम्हारा कर्मक्षेत्र हो,
सेवा धर्म बनालो ।।

वन में निश्चिन्त रहूँगा
तुम जा राज्य सँभालो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भरत श्रीराम की पादुका लेकर अयोध्या लौटे और कर्तव्यनिष्ठ सेवक के समान सिंहासन पर पादुका को प्रतिष्ठित कर नन्दीग्राम से राज्य भार संभालने लगे। कुछ दिनों तक चित्रकूट में रहकर श्रीराम वन में और आगे बढ़े, दण्डकारण्य में प्रवेश किया और पंचवटी में कुटी बनाकर वहीं रहने लगे। एक दिन वन में राक्षसी शूर्पणखा ने मायाजाल का विस्तार किया।

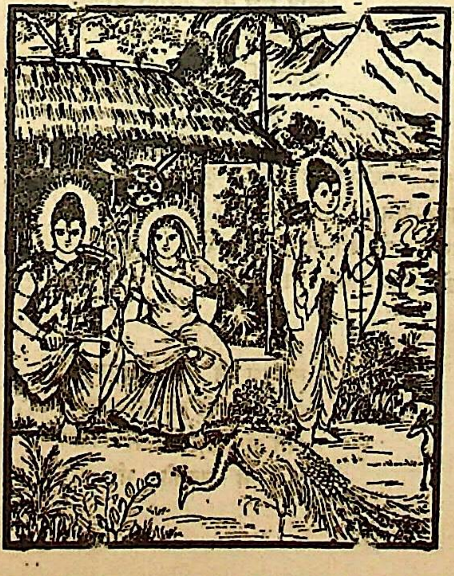

पंचवटी में श्रीराम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शूर्पणखा प्रसंग

काम मोहिता शूर्पणखा,
छलने आई राम लखन को,
सुन्दर अपना रूप दिखा ।।

हाथों में लेकर वरमाला,
आई प्रभु तक ज्योंही बाला,
देख जानकी संग राघव को,
उसने फिर भी धैर्य रखा ।।

सोचा "लक्ष्मण को ही वर लूं,
आत्म-समर्पण उसको कर लूं,"
बोली, "तन की आग बुझा दो,
मुझे ग्रहण कर प्राण-सखा" ।।

लक्ष्मण ने पहले समझाया,
पर कामिनी को ज्ञान न भाया,
अंग भंग तब किया लखन ने,
प्रभु ने उनको भी परखा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

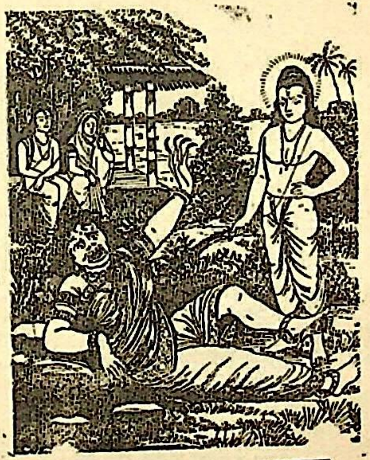

अंग भंग तब किया लखन ने

शूर्पणखा की प्रतिहिंसा ने भीषण रूप धारण किया। खरदूषण का, उनकी सेना के साथ वध किया श्रीराम ने। अपमानिता रोती कलपती रावण के पास पहुंची। भाई रावण क्रोध से जल उठा। प्रभु को नारद का अभिशाप पूर्ण करना था, अतः उनकी इच्छा से सीता अपनी छाया मूर्ति रखकर अग्नि में समा गई। मारीच को स्वर्ण मृग बन श्रीराम के हाथों मरने के लिए रावण ने विवश किया और अभागिनी सीता कंचन मृग के मोह में पति और देवर से बिछुड़ गई, उसका अपहरण हुआ।

कंचन मृग लख सिया लुभाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरिण रूप तो केवल छल था।

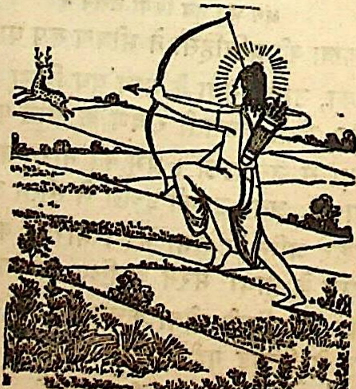

पीछे दौड़े, लगे बाण ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीता हरण

कंचन मृग लख सिया लुभाई,
कुटी छोड़ जब गये राम,
तब घटी हाय घटना दुखदाई ।।

मारीच दुष्ट था, भीषण खल था,
हरिण रूप तो केवल छल था,
प्रभु से पाने मृत्यु विकल था,
शर से बिंधने को चंचल था,
शूर्पणखा के उर की ज्वाला,
अब प्रतिशोध–मेघ बन छाई ।।

माया–हठ था सहज सिया का,
क्षण समीप दारुण विपदा का,
लक्ष्मण को दे भार प्रिया का,
प्रभु ने मृग छौने को ताका,
पीछे दौड़े, लगे बाण,
मारीच दुष्ट ने सद्गति पाई ।।

बना राम सा अपना ही स्वर,
"हा सीते, हा लक्ष्मण," कहकर,
मायावी मारीच गया मर,
सुनकर सीता रोती झर झर,
कहती, "लक्ष्मण जाओ तत्पर,
बुला रहे भाई को भाई ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैसे मिटे नियति का लेखा,
हुआ जानकी को भी धोखा,
लक्ष्मण ने समझाकर देखा,
हुए विवश तव खींची रेखा,
और गये, जाते ही उनके,
दुष्ट दशानन की वन आई ॥

साधू बन, सीता मन जीता,
"भीख मुझे दो," कपटी कहता,
पति की चिन्ता से भयभीता,
रेखा लांघ गई हा सीता!
उड़ा उन्हें ले, मार जटायू,
लंका का राजा अन्यायी ॥

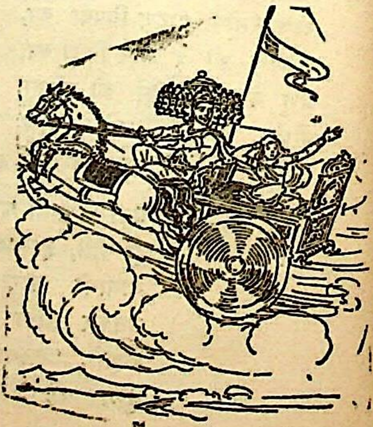

उड़ा उन्हें ले, मार जटायू
लंका का राजा अन्यायी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

विलाप करती हुई सीता को लेकर रावण उड़ चला। गीधराज जटायू के प्रयत्न निष्फल हुए। सीता को न पाकर प्रभु शोक सागर में डूब गये -- हाहाकार कर विलाप करने लगे। लता, वृक्ष, पक्षी, पशु सबसे सीता के बारे में पूछने लगे। भक्त वत्सल श्रीरामचन्द्र मरते हुए जटायू से लिपट कर रोये, और मरने पर उसका दाह संस्कार किया।

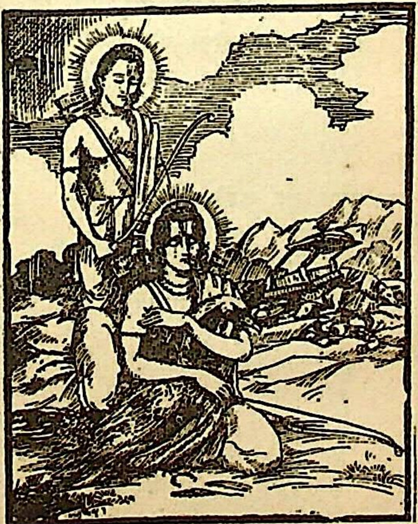

मिले जटायू मरते मरते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराम विलाप

खोकर प्राणप्रिया सीता को
व्याकुल राघव अश्रु वहाये ।।

कंचनमृग को मार भटकते,
मनुजरूप प्रभु हाय विलखते,
"सीता सीता सीता", जपते,
आज कृपासागर अकुलाये ।।

क्षतविक्षत हो लड़ते लड़ते,
मिले जटायू मरते मरते,
"हा हा" कर श्रीराम लिपटते,
गीधराज ने प्राण गँवाये ।।

दाहकर्म कर आगे बढ़ते,
ऋषि मुनियों का संकट हरते
सत्य-मार्ग पर सदैव चलते
शबरी के आश्रम प्रभु आये ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शबरी ने श्रीराम प्रभु, लक्ष्मण और जानकी का सत्कार किया। बहुत दिनों से वह श्रीराम की प्रतीक्षा करती हुई जी रही थी। जिन वृक्षों के फल मीठे थे, उनसे मीठे फल चुन चुन कर उसने उन लोगों को खाने का विनीत आग्रह करते हुए कहा—

नीच जाति में शबरी

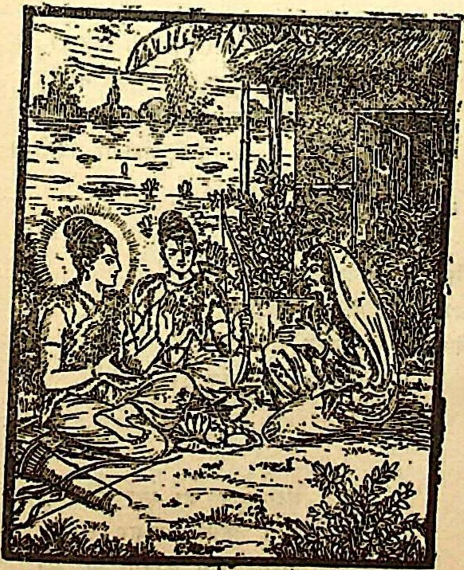

मिलना था तुमसे प्रभु मेरे, इसीलिये मैं ठहरी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शबरी प्रीति

नीच जाति में शबरी,
मिलना था तुमसे प्रभु मेरे,
इसीलिये मैं ठहरी ।।

दासी हूँ रघुनाथ तुम्हारी,
दुर्बल, वृद्धा, अनपढ़ नारी,
तब चरणों की महिमा न्यारी,
दुखी अहल्या उबरी ।।

निर्धन हूँ, अवलंब हीन हूँ,
प्रभुवर ! मैं अत्यन्त दीन हूँ,
केवल हैं कुछ कन्द, मूल, फल,
भरी गंग-जल गगरी ।।

वृक्ष-वृक्ष जा सुख पाई हूँ,
मीठे फल चखकर लाई हूँ,
खाओ प्रभु कुटिया मे मेरे,
मैं बाहर हूँ प्रहरी ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शबरी नश्वर शरीर त्याग कर मुक्त हुई। श्रीराम और लक्ष्मण बन में और आगे बढ़े। श्रेष्ठतम भक्त पवनसुत हनुमान उनसे मिले, दोनों भाइयों को पीठ पर बिठा कर सुग्रीव से मिलाया। सुग्रीव अग्नि को साक्षी रख श्रीराम के मित्र बने। सीता द्वारा ऊपर से फेंके गये वस्त्राभूषणों को पहचान कर प्रभु के अश्रु झरने लगे। श्रीराम ने मर्यादा–हीन बाली का वध किया, बाली की पत्नी तारा, पति शोक में व्याकुल हो विलाप करने लगी। प्रभु ने बाली–वध के कारणों का उल्लेख करते हुए तारा को समझाया:–

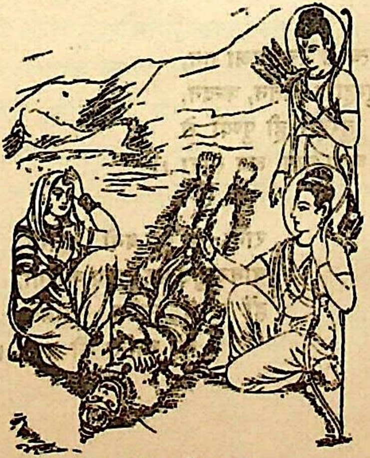

अश्रु पोछ लो तारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाली वध की सार्थकता

अश्रु पोंछ लो तारा,
वाली ने तोड़ी मर्यादा,
इसीलिये संहारा ॥

सत्कर्मों को त्याग अभागा,
भ्राता–पत्नी से अनुरागा,
भूल गया वह ज्ञान-धर्म-पथ,
सन्तों को धिक्कारा ॥

पंच–तत्व से रचा हुआ तन,
व्यर्थ तुम्हारा चिंतन, क्रन्दन,
सती ! तुम्हारे ही पुण्यों से
धुला पाप, अब सारा ॥

रानी तुम ही बनी रहोगी,
वानर कुल पर राज्य करोगी,
हों अंगद सुग्रीव सहायक,
बहे शान्ति की धारा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अचानक निरंकुश राज्य व सम्पत्ति का अधिकार पाकर सुग्रीव कुछ दिनों के लिये सीता को खोजने की बात भूल गया पर बाद में उसे बहुत पश्चाताप हुआ। सीता को खोजने के लिये सब दिशाओं में वानर भेजे गये। हनुमान–जाम्बवन्त आदि समुद्र तट पर पहुंचे। प्रचण्ड शक्तिशाली हनुमान सुरसा, लंकिनी आदि राक्षसियों का शमन कर वायुवेग से लंका पहुंचे। लघुरूप धारण कर उन्होंने लंका के एक एक महल की खोज की पर माता जानकी को न पाकर अत्यन्त दुखी हुए। उधर राक्षसियों से घिरी हुई, अशोक वन में चिर दुःखिनी सीता रो–रो कर अपने दिन काट रही थी।

व्याकुल सीता रोती,
करुणा की साकार मूर्ति वह अश्रु कणों में खोती।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जानकी विलाप

व्याकुल सीता रोती,
करुणा की साकार मूर्तिवह,
अश्रु कणों में खोती ।।

नाथ! तुम्हारी चरण-धूलि वन,
हर्षित में कानन थी आई,
इच्छा के विपरीत, तुम्हारी
कृपा छीन, कर में मुसकाई,
तुम्हें भेजकर दूर विपिन में,
पापकर्म मैंने कर डाला,
हुई लोभ-वश, चढ़ा मोह का
कलुषित रंग हृदय पर काला,
हे जग–वन्दन, हे रघुनन्दन,
देर तुम्हें क्यों होती ?

दुष्ट दशानन का अशोक–वन,
मुझे निगलता हाय शोक बन,
क्षमा करो प्रियतम जीवन-धन!
क्षमा करो प्रिय देवर लक्ष्मण,
क्षमा करो जननी वसुन्धरे,
क्षमा करो कौशल्या माता,
आज तुम्हारी सीता को ले,
खेले निर्मम भाग्य विधाता,
पति से विछुड़ी मैं वियोगिनी,
क्यों न मर गई होती ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरे प्राण! क्यों रुका हुआ तू ?
क्या प्रभुवर सचमुच आयेंगे ?
क्या रावण सम निशाचरों को
मार धरा पर सुख लायेंगे ?
मायाविनि राक्षस–बालाएं,
व्यभिचारिणि अग्नि–ज्वालाएं,
जला रही हैं, गला रही हैं,
मुझे मृत्यु से मिला रही हैं,
सभी ओर छा गया अंधेरा,
आओ जीवन ज्योती ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

विभीषण से यह मालूम होने पर कि सीता अशोक वाटिका में बन्दिनी है, हनुमान वहाँ पहुँच गये। रोती कलपती सीता को बूढी त्रिजटा और विभीषण पत्नी सरमा सहारा दे रही थीं। माता जानकी को देख हनुमान के आनंद की सीमा न रही—आनन्द से उन्मत्त हो वे अशोक वाटिका का विध्वंस करने लगे। अक्षयकुमार का वध किया, फिर स्वेच्छा से मेघनाथ के नागपाश में बंध गये। रावण ने उनकी पूंछ में आग लगाकर उन्हें दण्डित करना चाहा पर परिणाम भीषण हुआ।

उठे पवन-सुत दे हुंकार,
रावण की अपमान वृत्ति से, हुआ प्रलय का था संचार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

लंका दहन

उठे पवन–सुत दे हुंकार,
रावण की अपमान–वृत्ति से,
हुआ प्रलय का था संचार ॥

वस्त्रावृत घृतसिक्त पुच्छ में,
आग लगा रावण हंसता था,
किन्तु दूसरे ही क्षण उसका
स्वर्ण–द्वीप धू–धू जलता था,
हनूमान के अट्टहास से,
निशिचर करते हा हा कार ॥

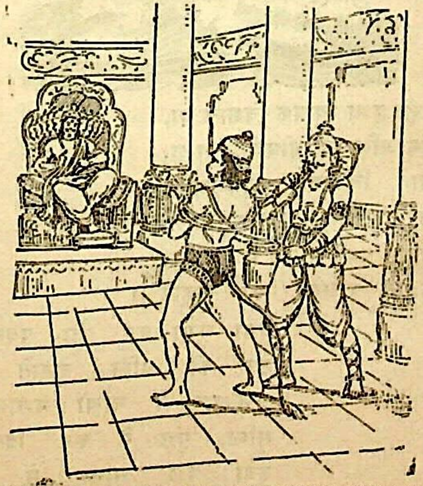

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

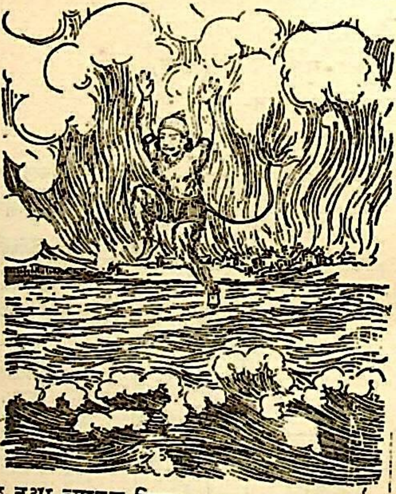

पुच्छ हुआ व्यापक विशाल था,
संग अग्नि की भीषण ज्वाला,
भागे निशिचर जाग जाग,
घर द्वार जले, सब ओर उजाला,
गृह में दबकर, पथ में जलकर,
हुआ राक्षसों का संहार ।।

घुमा घुमा कर पूंछ पवन-सुत,
उर की अग्नि बुझाते जाते,
क्षण-क्षण में लाखों मशाल की
सृष्टि, पूंछ से कर दिखलाते,
डुबा पूंछ सागर में बढ़ते,
करने माता का उद्धार ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आकर माता जानकी से हनुमान कहने लगे, "मेरी पीठ पर बैठ जाइये मातेश्वरी, एक ही छलांग में आपको प्रभु तक पहुंचा दूं।" सीता ने समझाया, "नहीं हनुमान, स्वामी के साथ ही यहां से लौटूंगी।" विवश हनुमान उनसे चूड़ामणि लेकर लौटे। सब कुछ सुन लाखों करोड़ों की वानर, भालुओं की सेना लेकर श्रीराम समुद्र तट पर पहुचे। पहले तो तीन दिन, तीन रात्रि तक प्रभु ने मार्ग प्राप्ति के लिये समुद्र की आराधना की, पर फिर भी जब समुद्र का गर्व खंडित्त नहीं हुआ तब जल का शोषण करने के लिये उन्होनें तीर उठाया। समुद्र तब चरणों पर गिरकर क्षमा मांगने लगा और सेतुबंधन की याचना करने लगा। फिर क्या था, विश्वकर्मा का बेटा नल इस कला में अत्यन्त दक्ष था। वृक्षों को उखाड़कर, बड़े बड़े पत्थरों को जल में डाल डाल कर, सेतु–बंधन का कार्य वानरों ने मिलकर प्रारंभ किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेतु बन्धन

सेतु–बंधन सेतु–बंधन,
वृक्ष पत्थर का नियोजन ।।

विश्वकर्मा–पुत्र नल था,
पिता से भी विपुल बल था,
राम का संकेत पाकर,
व्यस्त थे उन्मत्त कपि–गण ।।

निमिष में ही पुल बना था,
प्रेम राघव से घना था,
कोटि वानर मिल, उदधि का,
कर रहे थे गर्व खण्डन ।।

बढ़ा वानर सैन्य उसपर,
भार से जल–कम्प थर थर,
दे रहे उत्साह सबको,
पवन–सुत, सुग्रीव, विभीषण ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराम अपनी विशाल वानर सेना सहित लंका पहुंचे। अंगद को युद्धारम्भ से पूर्व श्रीराम ने रावण के पास भेजा ताकि निरर्थक युद्ध न हो और रावण सम्मान पूर्वक सीता को मुक्त कर दे। दम्भी रावण ने अंगद का भी पूर्ववत् अपमान किया। अंगद ने मुस्करा कर अपना पांव भूमि पर जमाया और राक्षसों को चुनौती दी कि चरण को केवल हिलाकर ही वे अंगद की शक्ति का अनुमान लगावें। जब सारे निशिचर थक गये और चरणों को न हिला सके, तब अंगद ने पुनः रावण को समझाने का प्रयत्न किया किन्तु :–

क्रुद्ध, क्षुब्ध, हठधर्मी रावण
गरज गरज कहता, "जा जा रे।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रावण–अंगद संवाद

हिला चरण जब निशिचर हारे,
क्रुद्ध, क्षुब्ध, हठधर्मी रावण
गरज गरज कहता "जा जा रे" ।।

हँसकर तब अंगद यों बोले,
'क्यों करता है दम्भ दशानन ?
क्यों लंका का सर्वनाश हो ?
बहुत बड़ा है राघव का मन !
मरें मिटें क्यों राक्षस सारे !"

"हा: हा: हा: वानर भालू सब
चबा चबा राक्षस खायेंगे,
हो:हो:हो:हो: उछल उछल कर
मेरे अनुचर रक्त पियेंगे!
राम लखन जायेंगे मारे!"

"अभी समय है, क्षमा मांग ले,
दुखी जानकी को पहुँचा दे,
राम-चरण ले शरण अभागे,
छोड़ पापमय नीच इरादे!
शरणागत के राम सहारे!"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंगद के द्वारा रावण को समझाने का अंतिम प्रयास भी व्यर्थ होने पर घमासान युद्ध हुआ। लक्ष्मण पर मेघनाथ द्वारा मारा हुआ शक्तिशेल हनुमान की लायी हुई संजीवनी से व्यर्थ हुआ। कुम्भकर्ण, मेघनाथ, रावण के प्रतापी सभी सेनापति एक के बाद एक मारे गये। मन्दोदरी का रावण को समझाना भी व्यर्थ हुआ और अंत में रावण भीषण युद्ध कर मारा गया।

युद्ध हुआ तब प्रचण्ड, रावण को मिला दण्ड।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राम–रावण युद्ध

युद्ध हुआ तव प्रचण्ड,
रावण को मिला दण्ड ।
क्रोध, लोभ, मोह–युक्त,
भीषण जिसका घमण्ड ।।

सन् सन् सन् तीक्ष्ण वाण
थर थर भयभीत प्राण,
राक्षस लोहूलुहान,
मृत्यु विना नहीं त्राण,
युद्ध हुआ घमासान,
रक्त–सिक्त भूमि–खण्ड ।।

छद्‌मरूप मेघनाद,
शक्तिशेल उग्र घात,
करै लखन आर्त्तनाद,
किन्तु पवन–पुत्र साथ,
संजीवन लिये हाथ,
हंसे लखन मंद मंद ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुम्भकर्ण महाकार,
निगले कपि मार मार,
"त्राहि त्राहि", कपि पुकार,
प्रभु ने तब कर संहार,
दूर किया विश्व–भार,
काँप उठा ब्रह्माण्ड ॥

शक्तिमान, अति प्रबुद्ध,
दशमुख पर काम–मुग्ध,
भ्रातृ–सखा–हीन क्षुब्ध,
प्रलयंकर रूप, क्रुद्ध,
अंतिम कर विकट युद्ध,
मरा, मिटा, उद्दण्ड ॥

अंतिम कर विकट युद्ध, मरा मिटा, उद्दण्ड

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराम विजयी हुए। अधर्म, अन्याय और पापाचार से लंका को मुक्ति मिली। सीता की अग्नि परीक्षा हुई। अग्निदेव ने स्वयं प्रकट होकर श्रीराम से निवेदन किया, "सीता निष्कलंक है, निष्पाप है।" श्रीराम ने सहर्ष सीता को स्वीकार किया। रोती हुई मन्दोदरी को उन्होंने समझाकर धीरज बंधाया और विभीषण को लंका का राज्यभार सौंपा। वनवास का समय पूर्ण हुआ। अयोध्या लौट चलने की तैयारी होने लगी। विभीषण ने विनम्र शब्दों में कहा, "प्रभु! रावण द्वारा पापार्जित धन सम्पदा मुझे नहीं चाहिए। मणि, मुक्ता, हीरे पन्ने अपने साथ ले जाइये।" श्रीराम ने हंसकर कहा, "मेरे राज्य में भी इनकी कोई उपयोगिता नहीं है विभीषण। यदि तुम्हारे लिये इनकी आवश्यकता न हो तो वानरों को बांट दो।" विभीषण के आदेशानुसार सभी मूल्यवान आभूषण वानरों में वितरित कर दिये गये, जिन्हें पहन-कर, फेंककर, चबाकर वानर उछलने कूदने लगे।

बँटे विभीषण की आज्ञा से
लंका के आभूषण सुन्दर, मोती पत्थर हुए बराबर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आभूषणों का मूल्यांकन

बँटे विभीषण की आज्ञा से
लंका के आभूषण सुन्दर!
मोती पत्थर हुए बराबर!

कर्णाभूषण पहन नाक पर,
डाल हाथ में ढीले पैजन,
बिंदिया डाले कण्ठहार में,
डाल पाँव में सुन्दर कंगन,
खूब सजे तब भालू वानर ।।

करधन को माथे पर बाँधे,
बाँध गले का हार कमर में,
उल्टे सीधे सारे गहने,
वानरत्न शोभित क्षणभर में,
गहनों का अपमान सरासर ।।

हीरे मोती चबा चबा कर
वानर भालू थूक रहे थे,
सुनकर भीषण अट्टहास–रव
निशिचर भय से सूख रहे थे,
व्यर्थ हुआ गहनों का आदर ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक वह दिन था जब श्रीराम से मिलने भरत आये थे और आज चौदह वर्ष का वनवास पूर्णकर, पुष्पक रथ पर आरूढ़ हो, श्रीराम जानकी और लक्ष्मण भरतजी से मिलने अयोध्या आये :–

भरत से मिलने आये राम

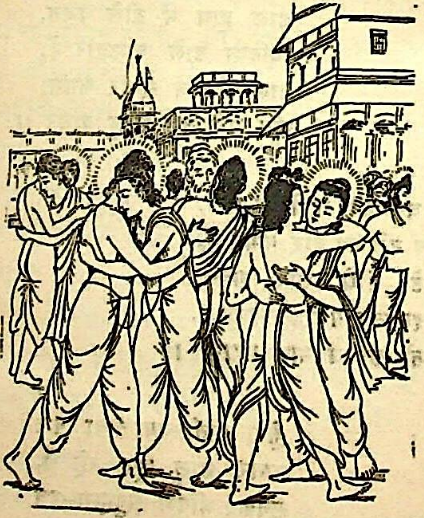

अयोध्या में आनन्दोत्सव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

भरत–राम मिलन

भरत से मिलने आये राम,
रावण का संहार किया फिर,
लौटे अपने धाम ।।

वन में चौदह वर्ष बिताकर,
ऋषियों को संतुष्ट बसाकर,
राज्य विभीषण को दे प्रभुवर,
पूर्ण किये सब काम ।।

सीता ने दी अग्नि परीक्षा,
मिलन बन गई, विरह-प्रतीक्षा,
पुष्पक रथ में राम लखन सिय,
कैसी छटा ललाम ।।

यदि न राम कानन को जाते,
सत्य, धर्म की लाज बचाते,
राम राज्य तब कैसे लाते?
मिटा असुर संग्राम ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

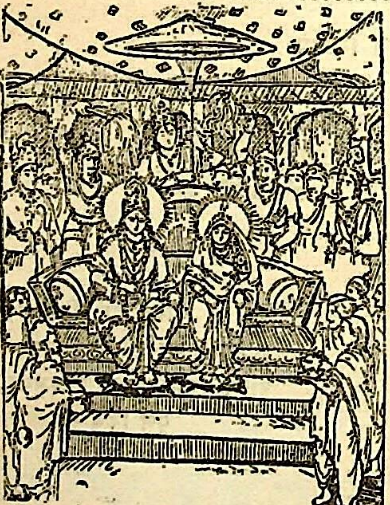

सिंहासन पर सीता राम

श्रीराम ने राज्यभार सम्भाला। विरही भरत को श्रीराम मिले, विरहिणी उर्मिला को मिले लक्ष्मण, सबसे अधिक प्रसन्न थी विधवा कैकेई, उसके पापों का प्रायश्चित्त हुआ था। सीता महारानी बनी। रामराज्य की स्थापना हुई। कुछ समय के उपरान्त सीता गर्भवती हुई, पर सुख के प्रारम्भ काल में ही विधाता ने उनपर दुख का पहाड़ फिर से ला पटका। धोबी के कथन की प्रतिक्रिया को लोक-रंजन कार्य हेतु उचित मानकर राजा राम ने रानी सीता के परित्याग का निर्णय लिया। राजा का कठोर कर्तव्य उन्हें इस दुखद कार्य के लिये प्रेरित कर रहा था :-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजा राम की अग्नि परीक्षा

राजा हूँ, सम्पूर्ण प्रजा का भार ग्रहण कर जाग रहा हूं।

सीता का लंका में रहना, बना आज संशय का कारण,
धोबी की ले आड़ अनेकों, करते हैं कुत्सित संभाषण,

कलुषहीन निष्पाप जानकी, सभी जानते अग्नि–परीक्षा,
रानी का कर्त्तव्य करे अब, नारी–मर्यादा की रक्षा,

प्रजा रहे संतुष्ट अवध में, इसीलिये रानी जाये वन,
भले दुखी हों राम जानकी, बना रहे आदर्श चिरतन,

सीता मेरें उर का स्पन्दन, मुक्ति उसी से मांग रहा हूं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं जानती रानी सीता, दुख का पर्वत टूट पड़ा है,
नहीं जानती मा कौशल्या, राघव का दायित्व बड़ा है,

नहीं जानता भाई लक्ष्मण, जाना है सिय को पहुंचाने,
जिस भाभी को लड़कर पाया, अपने हाथों उसे गंवाने,

रोवेंगी श्रुतकीर्ति, माण्डवी और उर्मिला, पुरजन-परिजन,
जब जानेंगे, रामराज्य में होता रानी का निष्कासन,

रघुकुल-संबल गर्भ धारिणी, सीता को मैं त्याग रहा हूं ॥

पातिव्रत ही नहीं, जगत में, पत्नीव्रत भी आवश्यक है,
नारी पति में अनुरक्ता, अनुरक्त पुरुष उसका रक्षक है,

सदा जपूंगा नाम तुम्हारा, सीते! दोनों दुख भोगेंगे,
तुम कानन, हम राज भवन में, केवल जनहित ही सोचेंगे,

माता बनकर फिर भी तुम तो, दुख का भार उठा ही लोगी,
हाय अभागे पिता-राम को, राज्य-धर्म की चिंता होगी,

सहने दो सन्ताप राम को, सह लूंगा. दुख खूब सहा हूं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभागिनी सीता को राजा राम की आज्ञा से लक्ष्मण वाल्मीकि आश्रम के समीप छोड़कर लौट गये। बेचारी सीता श्रीराम की मंगल कामना करती हुई फूट फूट कर रोने लगी। ऋषि बाल्मीकि ने सान्त्वना देकर उन्हें आश्रय दिया और समय पूर्ण होने पर लव एवं कुश का जन्म हुआ। अब सीता महारानी जानकी नहीं, अपने दो लाड़ले बेटे लव और कुश की केवल मां थी।

सीता सीता सीता !
राज महल से दूर कुटी में
थी लवकुश की माता ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर्त्तव्य परायणा सीता

सीता! सीता!! सीता!!!
राज महल से दूर, कुटी में,
थी लव–कुश की माता ।।

पति को पा कर, फिर खो बैठी,
निरपराध सत्वन्ती,
बच्चों को उर से चिपटा कर,
दुख ही दुख में गलती,
वन में भी थी, जो छाया वन,
आज हुई परित्यक्ता ।।

लव कुश थे नयनों के तारे,
राम–रूप थे दोनों,
एक राम की पूर्ति कर रहे,
दो लघु राघव मांनो,
वाल्मीकि के आश्रम में हीं
उनका बचपन बीता ।।

मर्यादा में श्रेष्ठ राम थे,
प्रजा–जननि थी सीता,
अपने सुख को त्याग उन्होंनें,
प्रजा–हृदय को जीता,
कैसे गाऊं गान अश्रुमय,
शब्द–कोष है रीता ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

लव कुश धीरे धीरे बड़े होने लगे। उनमें ही श्रीराम की प्रतिमूर्ति देख सीता अपने दुख के दिन काट रही थी। श्रीराम भी सीता से दूर रहकर कम दुखी नहीं थे। राजा–राम! सीता–पति–राम और पिता–राम भी तो थे किंतु अपने व्यक्तिगत दुख सुख से ऊपर उठकर एक आदर्श राम–राज्य की स्थापना का उद्देश्य ही उनका लक्ष्य था। गुरु वशिष्ठ और मन्त्रियों की इच्छा से अश्वमेघ यज्ञ की तैयारी हुई। विशाल आयोजन था, देश देश के राजा महाराजा यज्ञ मण्डप में उपस्थित थे। उसी समय ऋषि बालकों के समान दो बालकों ने आकर श्रीराम से कहा, "हम वाल्मीकि मुनि के शिष्य हैं। हमें गुरुदेव ने यज्ञ मण्डप में आपकी अनुमति लेकर उनका सिखाया हुआ रामायण गान करने कहा है। कृपा कर अनुमति दें।" श्रीराम ने स्वीकृति दी और पुत्रों ने पिता को उनका महान चरित्र गाकर सुनाया।

नन्हें बालक लव कुश करते रामायण का गान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लव–कुश कृत रामायण गान

पुत्र न जानें पिता यही हैं,
पिता न जाने पुत्र यही हैं,
नन्हें बालक लव–कुश करते,
रामायण का गान ।

एक वयस के दोनों बालक,
प्रभा–पूर्ण दो रघुकुल दीपक,
सुना रहे थे पुत्र पिता को
उनका चरित महान ।।

राज पुत्र ऋषि–वेश धरे थे,
नभ के दो गन्धर्व खड़े थे,
वाल्मीकि के मृदु भावों को
मिला आज सम्मान ।।

खुली देह, सिर जटा विराजे,
कर्ण–कुण्डलों से रवि लाजे,
हाथों में मधु वीणा बाजे,
मादक उसकी तान ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर–गंगा है यह रामायण,
यज्ञ भूमि पर यह पारायण,
श्रोता गण संग नर–नारायण,
आज कर रहे स्नान ॥

शब्द–चित्र में अपना जीवन,
देख रहे थे रघुकुल–दर्पण,
वास्तव से इतिहास मनोरम,
विकल हो उठे प्राण ॥

बाल, अयोध्यारण्य, किष्किंधा,
सुन्दर, लंका, उत्तर सब था,
संग स्वरों की लहरी विविधा,
बहती अमृत समान ॥

छोड़ सिंहासन राम उठ चले,
झर झर आंसू नयन से ढले,
पुत्रों को ले बाहु–पाश में,
रोते कृपा–निधान ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिता और पुत्रों का अभिनव मिलन यज्ञ–मण्डप में हुआ । सब के नेत्र गीले हो गये। वही प्रजा जो एक दिन महारानी सीता को निष्कासित करके भी दुखी नहीं हुई, हाहाकार करती हुई कहने लगी, हमारी मां, हमारी महारानी सीता निष्पाप है, निर्दोष है, निष्कलंक है। उनपर घोर अन्याय हुआ है, हम क्षमा चाहते हैं, उन्हें पूर्ण सम्मान के साथ बुलवाया जावे।" सबकी सम्मति से गुरु वशिष्ठ ने प्रजा–जननी सीता को वापस लेकर आने का आग्रह किया। अभागिनी जानकी वाल्मीकि ऋषि के आश्रम मे बैठी हुई सब कुछ सुन रही थी, सब कुछ समझ रही थी।" आज लव कुश को देख प्रजा के हृदय में परिवर्तन हुआ, राजा–राम ने रानी–सीता को क्षमा कर दिया,"सीता यह सब अनुभव कर रही थी। इतने दिनों की उसकी मौन व्यथा फूट कर बहने लगी, जननी वसुन्धरा से अत्यन्त करुण स्वरों में उन्होंने याचना की, कहनें लगी, "मां मेरा कार्य तो पूर्ण हुआ, राम–राज्य की स्थापना भी हो गई, लव कुश भी बडे हो गये। मेरे जीवित रहते हुए भी मेरी प्रतिमा के द्वारा यज्ञ का कार्य पूर्ण हो सका, इस जीवन से मुझे अब मुक्ति दे! मां मुझे वापस बुला ले, सहन शक्ति की मेरी सीमा अब टूट चुकी है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीता का आत्मोत्सर्ग

मां, अबतो मुझे बुलाले !
सहने की अब शक्ति नहीं मां,
अपनी गोद सुलाले ॥

राम–राज्य की हुई प्रतिष्ठा,
पति में मेरे सबकी निष्ठा,
स्वामी का गौरव–ध्वज फहरे,
तू मुझको अपनाले ॥

ले सुहाग मैं मिटूँ जगत से,
स्वामी मेरे डिगें न व्रत से,
मेरे बदले स्वर्ण–जानकी
उनके कार्य संभाले ॥

विदा मुझे दो लवकुश बेटे,
माता का धन पिता समेटे,
सुखी रहो, मेरे जीवन धन,
स्वामी की प्रतिभा ले ॥

सहने की अब शक्ति नहीं मां,
अपनी गोद सुलाले ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माता वसुंधरा ने सीता की करुण याचना सुन ली और सबने अश्रु पूरित नेत्रों से सीता का आत्मोत्सर्ग देखा। आजीवन कठोरतम परीक्षाएं देकर महासती सीता ने सर्व–कल्याण के आदर्श हेतु अपने आप को तक न्योछावर कर दिया।

श्रीराम व जानकी की पावन प्रतिमाएं पाषाण मन्दिरों की सीमा लांघ हमारे मानस–मन्दिरों में प्रतिष्ठित हों, हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की चरणधूलि ले अच्छे पुत्र, योग्य भाई, एक पत्नी व्रती, कर्त्तव्य परायण पिता, प्रजावत्सल शासक और मानव बन सके, घर–घर में सीता के समान सद्गुणी कन्याएं, स्नेह-मयी बहनें, त्यागमयी पतिव्रताएं एवं धैर्यवती कर्त्तव्य निष्ठ माताएं हों, यही मेरे "गीत–रामायण" गान का उद्देश्य रहा है।

श्रीरामप्रभु व जानकी के चरणों पर कथा–सूत्र द्वारा गुम्फित गीत-सुमनों की माला त्रुटियों के लिए क्षमा याचना सहित सादर समर्पित कर रहा हूं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

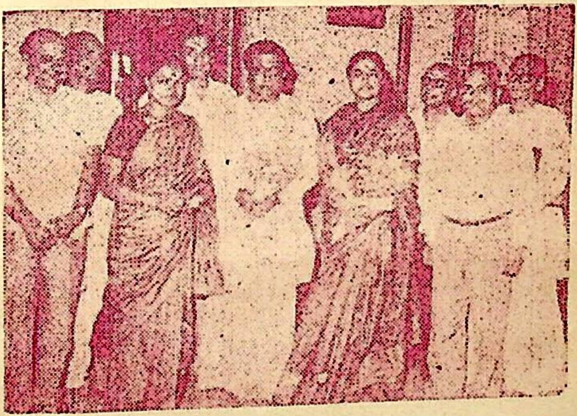

"संचारिणी" बम्बई द्वारा आयोजित "गीत रामायण" कार्यक्रम के अवसर पर लिए गए चित्र में (बांयें से चौथे) श्री सचिन शंकर (रामायण नृत्य नाट्य निर्देशक) डा० अरुण कुमार सेन, श्रीमती अनिता सेन, श्री सुधीर फडके व श्री राजेन्द्र शंकर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

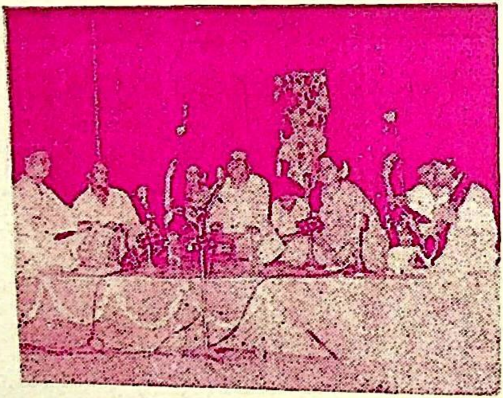

रंगभवन बंबई में "गीत रामायण" गान करते हुए डा. सेन एवं श्रीमती सेन

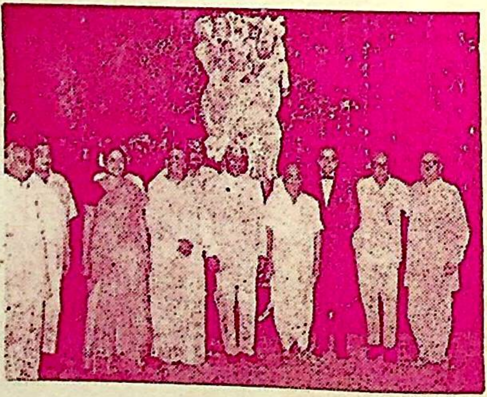

सुर सिंगार संमेलन बंबई द्वारा रंगभवन में आयोजित भजन सम्मेलन, (४ नवम्बर ६९) में महाराष्ट्र के वित्तमंत्री श्री वानखेडे के एक ओर डा. सेन व श्रीमती सेन व दूसरी ओर श्री सुधीर फडके। दाहिनी ओर से प्रथम सम्मेलन के संचालक श्री ब्रजनारायण खड़े हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"गीत रामायण"

पर सम्मतियाँ :-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वामी आत्मानन्द

दूरभाष– १०४६
रामकृष्ण मिशन
पो० विवेकानन्द आश्रम,
रायपुर
२५–८–७०

मुझे डा० अरुण कुमार सेन की हिन्दी गीत–रामायण सुनने का दो वार अवसर प्राप्त हुआ है। जब उन्होंने यह गीत–रामायण तैयार की तो इसका प्रथम सार्वजनिक आयोजन हमारे आश्रम के तत्वाधान में विवेकानन्द जयन्ती–महोत्सव के अवसर पर जनवरी १९६९ में किया गया था। आश्रम में इसका दूसरी वार आयोजन जनवरी १९७० के उत्सव में हुआ था। प्रत्येक बार डा० सेन के विभिन्न राग–रागिनियों में वद्ध इस रामायण गान ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर लिया था। इसके गीतकार वे स्वयं हैं और गीतों को विभिन्न रागों में वांधने का कार्य भी आपने ही किया है। गीतों की भाषा प्रांजल है। शब्दों का चयन वड़ी खूबी के साथ किया गया है तथा रामायण के मार्मिक प्रसंगों को अनुरूप भाव व्यक्त करने वाले छन्दों में वांधा गया है। छन्दों और भावों के अनुरुप ही राग–रागिनियों का भी कुशल चुनाव किया है। उदाहरणार्थ, राम वनवास के पश्चात्, ननिहाल से भरत के लौटने पर, पिता की मृत्यु तथा सीता एवं लक्ष्मण सह भाई के वन जाने के समाचार को सुनकर भरत का विलाप करुण रस की जैसी तीव्र अभिव्यक्ति करता है, उसी प्रकार राम–रावण–युद्ध के समय का शौर्य–वीर्यपूर्ण वर्णन वीर–रस की अनुपम अभिव्यंजना करता है। थोड़े से समय में श्रोताओं को समस्त रसों की अनुभूति प्रदान करने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाला डा० सेन का यह प्रयास हिन्दी के क्षेत्र में अनूठा है और अत्यन्त श्लाघनीय है। जो भी एक बार इसे सुनता है, वह मुग्ध हो जाता है और उसे पुनः सुनने की इच्छा होती रहती है। इस गीत–रामायण में वही संक्रामकता है जो वहुधा फिल्मी गीतों में पायी जाती है; वल्कि कहा तो यह जा सकता है कि कसौटी पर कसने पर इसकी संक्रामकता फिल्मी गीतों की अपेक्षा कहीं अधिक तीव्र सिद्ध होगी। जहां फिल्मी गीत, गाने और सुनने वाले के मानस को कलुषित कर उसे निम्नगामी वना देते हैं तथा उसके भीतर के पशु को जगा देते हैं, वहां यह गीत–रामायण गायक और श्रोता दोनों को एक उदात्त भावभूमि पर ले जाती है और उसके भीतर के देवता को प्रवुद्ध कर जाती है।

मैं हार्दिक कामना करता हूँ कि डा० सेन की यह गीत–रामायण नगर–नगर, गांव–गांव और घर–घर फैल जाये तथा वडे–बूढों और वच्चों के अधरों पर अपना आसन प्रतिष्ठित कर ले।

स्वामी आत्मानन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुर सिंगार सम्मेलन

"गीत रामायण"—भक्ति पूर्ण वातावरण

सुर सिगार संसद द्वारा आयोजित सात दिवसीय सुर सिंगार सम्मेलन मंगलवार को भक्तिपूर्ण वातावरण में समाप्त हुआ। अन्तिम दिन भजन सम्मेलन में दो गायक सुधीर फडके और अरुण कुमार सेन ने रामायण का गान अपने अपने ढंग से किया।

सुधीर फडके ने श्री जी. डी. माडगुलकर लिखित "गीत रामायण" के कुछ चुने हुये पद प्रस्तुत किए। यह "गीत रामायण" पहले ही लोक प्रिय हो चुका है और सुधीर फडके जिस भावपूर्ण ढंग से उसे प्रस्तुत करते हैं वह अन्तर को छूने वाला है। रामायण के कुछ मार्मिक स्थलों का चुनाव भी अद्भुत है। इसका आरम्भ इस प्रकार किया है कि लव कुश श्रीराम को रामायण सुना रहे हैं। इसी प्रकार अन्य मार्मिक स्थलों को लेकर लिखे गए गीत तथा उनके गायन में भावपूर्ण वातावरण की सृष्टि हुई।

रायपुर के डा० अरुण कुमार सेन ने संस्कृत, हिन्दी, बंगला व तेलगू रामायणों से मार्मिक स्थलों को चुनकर पुरुषोत्तम श्रीराम के सिद्धान्त पर स्वयं "गीत रामायण" लिखी है। इसमें रामायण के मार्मिक स्थलों का सुन्दर चुनाव है और यह राम जन्म से लेकर सीता के पृथ्वी में समा जाने तक का वर्णन है। अरुण कुमार उसी भाव से ओत प्रोत होकर इसका गायन करते हैं।

दोनों कलाकारों द्वारा रामायण का प्रस्तुतीकरण शास्त्रीय रागों को आधार लेकर किया गया। दोनों ही भक्ति भाव में डूबकर गाते हैं। श्रीमती सेन ने गायन में डा० सेन का साथ दिया।

८–११–६९

नवभारत टाइम्स, बम्बई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Sancharini, a Bombay association to draw artistes and art-lovers together, which over a year ago sponsored the programme of Pandit Ravi Shankar in co-operation with the National Center for performing Arts in Bombay recently played host to Dr. Arun Kumar Sen and Mrs Anita Sen, of Madhya Pradesh. The Programme presented was **"Geet Ramayana"**, a series of songs in Hindi, composed, tuned and sung by Dr. and Mrs. Sen and linked witn a commentary in a narrative style which was highly emotional. Within this two hour recital, the fuller impact of this immortal epic with its salient features was brought home to the audience in a truly tabloid form. It made a disbeliever like me a believer for the time being. Dr. Sen has a sonorous voice, which he can pitch in a high or low key as the emotion demands. His wife has also a melodious voice, charged with emotion at times. Apart from being absorbing and engrossing in its own way, the programme was a virtual introduction to the vast variety, versatility and virtuosity of Indian classical music, generating various rasas like sringara, anger, laughter, fear, lust, karuna and might.

19th April 1969 **The Indian Monitor, Bombay**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

I am sure you all know the story of the golden stage. Remember the cruel words that Seeta said in anger to Lakshmana.

"Have you been with us waiting only for Rama to die? pretending to be his friend, were you hoping all the time for his death to secure me thereafter? Why else do you stand here, wicked wretch, and refuse to go to his reseue when he cries for help."

Episodes like this have been omitted by Dr. Arun Kumar Sen in his "Geet Ramayan" He thinks such words do not behove the noble characters of the Ramayan.

In his compositions, based both on Tulsi and Valmiki, he puts greater emphasis in projecting Rama as an ideal man, a "Maryada Purushottam". The character of Rama continues to be an inspiration to humanity if it is remembered that he was a human being with all the virtues that a human being ought to have.

Dr. Sen is a classical musician (He is Principal of the Kamaladavi Sangeet Mahavidyalaya, Raipur) and lately he has made a Name by rendering his Geet Ramayana in easily understandable Hindi. Each composition is in a different raga, Starting from the birth of Rama, it covers almost all the major episodes of the Ramayana.

He got his Ph. D. for a thesis on Tal. Encoureged by his success as singer of Geet Ramayana he has lately written songs on the lives of Mahavir and Gandhiji. He has a lofty aim. Wants to mould the characters of the young by making them aware of the lives of the great. Good luck Dr. Sen.

4 th May, 1969

The Times of India,
Ahmadabad.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२९–७–६९

डा. बलदेवप्रसाद मिश्र
राजनांदगांव

रामकथा स्वतः ही वड़ी आकर्षक प्रेरणाप्रद श्रौर कारुण्यपूर्ण हैं। जव उसमें साहित्य श्रौर संगीत दोनों का सहयोग हो जाता है तव भावनाएं और भी अधिक निखर उठती हैं और उनमें एक अपूर्व दिव्यता छा जाती है। इस परम्परा में रायपुर के श्री **डा. अरुण कुमार सेन** ने एक नई परिपाटी का सूत्रपात किया है। यों राधेश्यामी रामायण को भी कई लोग कई प्रकार से गाकर सुनाते हैं। परन्तु उन पोथियों को गाकर सुनाना अलग वाते हैं श्रौर दो घंटे में पूरी कथा का सार रख देना तथा जितने मार्मिक प्रसंग हैं उनको लेकर भावों को इस प्रकार प्रकट करना कि भावना के पथ से पूरी रामकथा का मर्म श्रोताओंके हृदयों पर श्रंकित हो उठे, एक विल्कुल ही अलग वात है। यह एक वडी कलात्मकता है इसमें कोई सन्देह नहीं। मैं समझता हूं कि दूसरे लोग अव इस क्रम को श्री सेन महोदय से सीख कर इसका अनुकरण करके लाभ उठावेंगे।

"गीत रामायण" केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं। मनोरंजन तो इससे होता ही है परन्तु साथ ही साथ इससे हृदय का परिष्कार भी होता चलता है। मराठी में इस परिपाटी का प्रयोग हो चुका है परन्तु हिन्दी के लिए यह एक अभिनव वस्तु है जिसके श्री सेन महोदय सर्वथा वधाई के पात्र हैं।

उन्होंने मार्मिक स्थलों से प्रसंगानुकूल हृदयस्पर्शी भाव लेकर "गीत रामायण" के पदों का निर्माण किया है। उनके निमन्त्रण पर मैं इनके पदों के विश्लेषण की नहीं किन्तु इनकी भावनाश्रों के आश्लेषण की वृत्ति लेकर गया और मैंने यह देखा कि उनके कई पदों को उनसे सुनकर मुझे वरवस अश्रुपात होने लगा था। कृति की सफलता का मेरी दृष्टि में यही सवसे वड़ा मापदण्ड होना चाहिए।

बलदेवप्रसाद मिश्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SUR SANDESH

A Monthly Bulletin of
Sur-Singar Samsad,
Bombay

WRITING of bhajan Sammelen the *Times of India* music critic said: "seven-day Sur-Singar Sammelan concluded on a sublime note" Instead of the usual bhajans, this year's programme had a novelty in the recitations of Ramayana in Maharati by Sudhir Phadke and in Hindi by "another equally gifted artist from Raipur, Arun Kumar Sen". Both the recitations were inspiring in their spiritual appeal; both "in their individualistic manner captured the true spirit of the noble theme". Phadke's presentation of selections from Madgulkar's Geet Ramayana made "a truly lasting impact on our minds"; that of Dr. Sen was no less moving. Making a judicious use of diffeaent ragas, Dr. Sen successfully created moods of joy and sorrow in which the listeners participated in no small measure. His clear, full-throated voice made his recitation extremely pleasing. He was ably supported by his wife, and even his two small sons participated.

November, 1969

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Keen Eye sees with blazing footlights—

For thousands of years Ramayan has been a glory of Indian civilisation. It has been immortalised by Adikavi Valmiki in Sanskrit, Goswami Tulsidas in Hindi, Krittivas in Bengali, Potanna in Telegu. and many other poets have rendered this epic in several languages. Apart from the traditional performances of rustic Ramlilas in rural areas and it's sophisticated lavish version before the urban audience during the Navaratri and Desera festivals there is hardly any discernible effort at perpetuating it's place in India's life and culture.

Rajendra Shankar, of Sancharini (brother of Uday, Ravi & Sachin Shankar) provided some time ago in Bombay a rare treat by introducing a scholarly couple Dr. A. K. Sen, and his wife Anita from Raipur, M. P. who gave a recital in Hindi for two hours. Dr. Sen has himself written verses and tuned them in classical mould. Joy in lighter episodes like Ram Janma, Seeta Swayamvara, Kevat Prasanga, Surpanakha-Anga-Bhanga, Lanka Dahan, Setu Bandhan, Ayodhya Punaragaman and grief in serious ones like Ahalya Uddhar, Rama Van Gaman, Urmila Viraha. Bharat Milap, Seeta Haran, Seeta Vilap. Seeta Van Gaman, Lavakush Ramayan Gan, Seeta's Patal Pravesh have been vividly and effectively described.

Dr. Sen says, "Through the Geet Ramayan....a bunch of self-composed songs, I pay my humble tribute to Shri Ram-Janaki as swaranjali. It's idea is to project The finest from the epic malieu and stress the 'Marvada Purushottam' way of life." He now works on a number of similar Subjects. His endeavour differs from others in approach, audience level, authentic content, suitable music and devotional presentation by an accomplished husband-wife team.

KEEN EYE feels that to hear Sen's Arun Kumar nd Anita — rendering in a fascinating, soft and modu-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
lated tone, is a worthwhile experience, both intellectual and soulful. In simple words, different ragas, suitable to the mood of situations and time, with accompaniment of Harmonium, Sitar, Tabla, Vela, Pakhawaj etc. instruments, Geet Ramayan of Dr. Sen is inspiring and has immense mass communication potential of reaching it's message to larger audiences than served at present. A special recital in the National Programme of music from the Delhi Station of A. I. R., if arranged, is sure to be enjoyed by the listeners all over the Country and even abroad by the Indians overseas.

September 19, 1969 **MOVIELAND, Madras.**

Sangeet Kala Kendra, Amritsar.

Ramayan recitation in any form is a unique experience of that love which transcends self ego. Recitation in Geet form is an added ecstacy as song beyond the word striking at the root direct, and thus, awakening an amazing fulfilment of an experience of bliss.

Dr. Arun Kumar Sen has introduced Ramayan for the first time, in Geet form, in spoken Hindi and his performance of Geet Ramayan at Sangeet Kala Kendra, Amritsar, on 13th May, 70 held the audience spell bound.

Delightful opening "stuti", in "Emen", was followed by moving songs depicting boatman's devotion, Bharat's Bhav, Urmila's unique love, Shriram's decision, etc and they highlighted the entire story from Ram-Janma to Janki's Patal–Pravesh most successfully.

Dhara Chand Thakur,
Director,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डब्ल्यू. व्ही. ओक,
आई. ए. एस.
कमिश्नर, रायपुर

डाक्टर अरुण कुमार सेन का हिन्दी–गीत रामायण सुनने का सु–अवसर मुझे मिला। वे मेरी सम्मति चाहते हैं। मैंने सुझाया कि इसके लिये तो रामायण के विद्वान भक्तों की ही सम्मति लेनी चाहिये, मुझ जैसों की नहीं। किन्तु डा० सेन का आग्रह है, और राम कथामें मुझे रस तो अवश्य है इस लिये कुछ विचार प्रकट कर रहा हूं।

विश्व के चिरंतन साहित्य में वाल्मीकि रामायण का स्थान निश्चित है। संस्कृत के ज्ञाता मूल, और अन्य साहित्यिक उसे अनुवाद में पढ़ते रहेंगे। इस आदिकाव्य के वाद भारतीय भाषाओं में अनेक रामायण लिखे गये। हिन्दी भाषियों के लिये राम-चरित मानस श्रुति–तुल्य है। फिर भी सदियां उलटती बोलभाषा वदलती है। आजकल पढ़ने, सुनने व करने लायक नई नई वस्तुएं अनेक हैं, जीवन कुछ व्यस्त है और काफी कुछ व्यवस्ता के भाव से चंचल है। रामकथा जनसाधारण के मन में जागृत रहे इस हेतु नये नये पेहराव में, आकर्षक ढंग से उसे पेश किया जाना सामाजिक एवं आध्यात्मिक महत्व का काम है।

यह आवश्यक व उपयोगी इसलिये है कि, ईश्वरी प्रेरणा से मनुष्य की प्रतिभा ने जीवन–आदर्श के जिन महत्तम प्रतीकों का निर्माण किया है उनमें भगवान रामचन्द्रजी का स्थान अनन्य है। भारतीय आस्था के पवित्र आलंवनों में रामचरित्र प्रमुख स्थान रखता है।

साहिय, समाज विज्ञान आदि सव दृष्टियों से रामकथा का विश्लेषण होना चाहिये। यह वौद्धिक कार्य रामायण मंथन का एक पहलू है। किन्तु हमारे व्यक्तित्व गठन के लिये भावलोक परिष्कृत करना, और संस्कारों को शुद्ध व पुष्ट वनाना कोई कम महत्व का काम नहीं वल्कि और अधिक मुश्किल है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भजन, कीर्तन, नाटक यह रोचक साधन इस हेतु उपयोगी हैं। पुराने कथा–प्रसंग अनेक प्रकार से नये नये ढंग से कहना यह भी कथावस्तु के भजन के तरीके हैं।

डा० अरुण कुमार सेन गायनाचार्य हैं। उनकी सुशील पत्नी की सहायता उन्हें प्राप्त है। प्रसंग के अनुरूप रागों द्वारा, उनके अपने रचे हुये पद तालवद्ध सु-स्वर से तो वे गाते ही हैं, किन्तु मुझ पर इससे भी अधिक प्रभाव पड़ा उनकी गहन गंभीर भक्ति का।

डा० सेन का गीत रामायण प्रेम का प्रयास है। वे अपने आप को पहुंचे हुए नहीं मानते, पथिक समझते हैं। इसलिये विनम्रता से किसी भी राहगीर से मार्गदर्शन पाने के इच्छुक रहते है।

मैंने उन्हें अभी एक ही वार सुना। उस दिन करुण रस प्रवल था। महत्तम व्यक्तियों के जीवन या विश्व जीवन की करुणा से हमारी छोटी–छोटी घटनाओं के अन्तराल में छिपी व्याकुलता शांत हो, और दुख से उद्विग्न होने की हमारी दुर्वलता चली जाये, यही करुणा का सही प्रयोजन है। करुणा द्वारा हमें हताश, दैववादी या दुर्वल वनने का भय नहीं होना चाहिये। रामचरित्र का करुण रस भव्य, धीर, उदात्त है।

मैं आशा करता हूं कि डाक्टर अरुण कुमार सेन के गीत–रामायण द्वारा स्नेहयुक्त सामाजिक पुरुषार्थ में प्रवृत करने वाली तथा मन को शान्त एवं ओजस्वी वनाने वाली प्रेरणा मिलेगी।

उनकी साधना के लिये मेरी रामचरणों में मंगल-कामना सर्मपित है।

डब्ल्यू. व्ही. ओक
४–४–६९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

U. MISRA
M. A. LL. B.,
Adhyacharya,
(Performing Functions
of Vice-Chancellor)

Telephone : 34
Indira Kala Sangit Vishwavidyalaya
KHAIRAGARH (M. P.)

Dated 10-7-69

प्रिय डाक्टर सेन,

आपकी गीत रामायण कल मिली ।

कूजन्तम् रामरामेति
मधुरं मधुरस्वरम्
आरुह्य गीतिकाशाखाम्
वन्दे श्रीसेन–कोकिलम्

गीत–रामायण का पूरा आनंद तो आपकी स्वर लहरी के साथ ही मिलता है ।

भवदीय,
उमावर मिश्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिन्दी में सम्पूर्ण रामायण को गीतों में बाँधकर प्रस्तुत करना एक क्रान्तिकारी प्रयास है।

१७ जनवरी, १९६९। दैनिक युगधर्म, रायपुर

रामायण की कथा से मर्मस्पर्शी प्रसंगों को छांट-छांट कर काव्य एवं स्वर बद्ध किया गया है। अवगाहन कर श्रोता प्रफुल्लित हो गए।

११ फरवरी, १९६९। दैनिक नव भारत, रायपुर

संचारिणी की ओर से गत रविवार को रायपुर कमलादेवी संगीत महाविद्यालय के प्राचार्य डा० अरुण कुमार सेन और उनकी पत्नी लक्ष्मीनारायण कन्या माध्यमिक विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अनिता सेन का 'गीत रामायण' कार्यक्रम आयोजित किया गया। वाल्मीकि, तुलसी, केशव, हरिऔध, मैथलिशरण गुप्त आदि कवियों ने इस आदि कथा को लेकर काव्य रचना की और यह आज भी कवियों के लिए प्रिय बनी हुई है। घर घर में प्रचलित रामायण की कथा और राम, सीता, भरत, लक्ष्मण आदि के चरित्र मानव मात्र के लिए आदर्श रहे हैं। डा० सेन ने वाल्मीकि और तुलसी को आधार मानकर अपनी गेय रचनाएँ बनाई है। डा० सेन और श्रीमती अनिता जिस भाव पूर्ण ढंग से इन गीतों का गायन करते हैं उससे एक भक्ति पूर्ण वातावरण बनता हैं और मानव श्री राम की मूर्ति साकार हो उठती है। इस विशाल कथा के चुने हुए पद भी सहज भाव से मन को आन्दोलित कर देते हैं। विशुद्ध खड़ी बोली में रचित ये पद भाव-प्रवण हैं।

३ अप्रेल, १९६९। नवभारत टाइम्स, बंबई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतीय शील और पराक्रम के प्रतीक के रूप में चिरकाल से पूजित राम की कथा एक ऐसी गाथा है जो लोकजीवन के विभिन्न छोरों को तो छूती ही है, एक शासक का वह रूप भी प्रस्तुत करती है जहां लोकरंजन अथवा प्रजा की संतुष्टि के लिए उस जीवन-संगिनी के भी त्याग की स्थिति आती है जिसने तुलसी के शब्दों में लोचनों के यन्त्रण' और 'ध्यान के कपाट' द्वारा प्राणों को निकलने से रोक रखा। भवभूति ने 'छाया सीता' की कल्पना करके राम की अतीव वेदना व्यक्त की।

संगीत के माध्यम से इस उदात्त चरित को प्रस्तुत कर डा. अरुणकुमार सेन ने अपनी कला का वह रूप जनता के सामने रखा है, जो एकांत साधना का परिमार्जन लिए लोकरुचि का आवर्जन करता है।

विशाल भारत ने युग युग से महापुरुषों को जिन चिरन्तन आदर्शों के आधार पर अंगीकृत किया, उनकी " बहुजन हिताय " व " बहुजन सुखाय " कल्पना को गीतमय स्वरूप देने की दिशा में डा. सेन ने सराहनीय कार्य किया है। "गीत गांधी" "गीत महावीर" "गीत नानक" आदि उन्हीं आदर्शों की गाथाएं हैं जिनके प्रसारण आकाशवाणी दिल्ली व अन्य केन्द्रों से होते रहते हैं। आपका अगला प्रयास है "गीत विवेकानन्द"।

डा. सेन का जन्म मध्यप्रदेश के राजिम नामक स्थान में हुआ। पारंपरिक शिक्षण के साथ-साथ आपने संगीत की साधना भी की। १९६६ में आपको 'भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन' शोधप्रबंध पर नागपुर विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई। आपकी एक नाट्य कृति है 'दुर्गावता' और अनूदित कृति है 'उत्तर भारतीय संगीत का इतिहास'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi